

10TH

HINDI EASY STUDY MATERIAL



जीत आपकी

सफलता की ओर ले जाने वाली सीढ़ी

हिंदी अध्ययन सामग्री

WITH KANNADA TRANSLATION

MD ZAKIR KOTWAL
M.D.R.S BELUR TOWN, HASSAN

अनुक्रमणिका

क्र.सं	गद्य / पद्य पाठ का नाम	कन्नड में अर्थ	विधा	लेखक / कवि
1	मातृभूमि	म्हाडृभूमी	कविता	भगवतीचरण वर्मा
2	कश्मीरी सेब	काश्मीरीन सैबु हळूळ	कहानी	प्रेमचंद
3	गिल्लू	ಅಳಲು ಮರಿ	रेखाचित्र	महादेवी वर्मा
4	अभिनव मनुष्य	ಅಧ್ಯನಿಕ ಮನುಷ್ಟ	कविता	रामधारीसिंह दिनकर
5	मेरा बचपन	ನನ್ನ ಭಾಲ್ತ	आत्मकथा	डॉ. ए.पी.जे अब्दुलकलाम
6	बसंत की सज्जाई	ಬಸಂತನ ಸತ್ಯಾಗ್ರಹ	एकांकी	विष्णु प्रभाकर
7	तुलसी के दोहे	ತುಳಸಿಯ ದೋಹೆಗಳು	दोहा	तुलसीदास
8	इंटरनेट-क्रांति	ಇಂಟರ್ ನೆಟ್ ಕ್ರಾಂತಿ	निबंध	संकलित
9	ईमानदारों के सम्मेलन में	ಪ್ರಾಮಾಣಿಕರ ಸಮೇಜಿನದಲ್ಲಿ	व्यंग्य रचना	हरिशंकर परसाई
10	दूनिया में पहला मकान	ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಮೊದಲ ಮನೆ	लेख	डा. विजया गुप्ता
11	समय की पहचान	ಸಮಯದ ಮಹಡಿ (ಸಮಯದ ಗುರುತು)	कविता	सियारामशरण गुप्ता
12	रोबोट	ರೋಬೋಟ್(ಯಂತ್ರ ಮಾನವ)	कहानी	डा. आलोक
13	महिला की साहस गाथा	ಮಹಿಳೆಯ ಸಾಹಸದ ಕಥೆ	व्यक्ति परिचय	संकलित
14	सूर-श्याम	ಸೂರ ಶಾಮ	पद	सूरदास
15	कर्नाटक संपदा	ಕರ್ನಾಟಕದ ಸಂಪತ್ತು	निबंध	संकलित
16	बाल-शक्ति	ಮುಕ್ಕಳ ಶಕ್ತಿ	लघु नाटिका	जगतराम आर्य
17	कोशीश करनेवालों की हार नहीं होती	ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡುವವರಿಗೆ ಸೋಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ	कविता	सोहनलाल द्विवेदी
18	पूरक वाचन	ಪೂರ್ಕ ವಾಚನ		
19	कन्नड में अनुवाद	ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಅನುವಾದ		
20	अपठित गद्यांश	ಓದದ ಗದ್ದ (ಅಪठित ಗದ್ದ)		
21	व्याकरण	ವ್ಯಾಕರಣ		
22	पत्र लेखन	ಪತ್ರಲೇಖನ		
23	निबंध लेखन	ಪ್ರಬಂಧ ಲೇಖನ		

MD ZAKIR . A . KOTWAL
M.D.R.S BELUR TOWN, HASSAN
CONTACT NO - 9740981536

1. कविता - मातृभूमि {म्हात्रभूमी}



आशय :- इस कविता द्वारा कवि मातृभूमि की विशेषता का परिचय

देते हुए छात्रों के मन में देश प्रेम का भाव जगाना चाहते हैं।

अ कवितेय म्हालक कवि म्हात्रभूमीय विशेषतेयन् परिचयिसुभूत् विद्याकिंगज
मुनसिनली देशभूत्य भावनेयन् म्हालिसलु प्रयुक्तिसुभूत्

कवि परिचय :- भगवतीचरण वर्मा

जन्म :- सन 30 अगस्त 1903

स्थल :- उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिला के शफ़ीपुर गाँव में हुआ।

शिक्षा :- इलाहाबाद से बी.ए. एल.एल.बी की डिग्री।

पुरस्कार :- 'भूले भूले - बिसरे चित्र' उपन्यास को साहित्य अकाडेमी पुरस्कार मिला।

रचनाएँ :- चित्र लेखा उपन्यास पर दो बार फिल्म निर्माण हुआ है। **उपन्यास** :- टेढ़े-मेढ़े रास्ते, पतन, तीन वर्ष, अपने खिलौने

कहानी संग्रह :- मेरी कहानियाँ, सम्पूर्ण कहानियाँ, मोर्चा बंदी। **कविता संग्रह** :- मेरी कविताएँ, सवनीय, और एक नाराज कविता।

नाटक :- मेरे नाटक, वसीयत। **मृत्यु** :- सन 5 अक्टूबर 1981



शब्दार्थ :-	हरे-भरे - छेक्क छेसुराद	खेत - झेलगळु	उपवन - उद्धानगळु	शत-शत बार - नूरारु भारी
	शायितः सोया हुआ - घुलिद	अमर - आमर	हस्त : हाथ - कैं	सुहाने : सुंदर - सुंदरवाद
	धाम : घर - मुनै	गूंजना - घुड़फ़ूळी	माता - भाई	पताका - धूळ

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कवि किसे प्रणाम कर रहे हैं ?

कवि यारन् नमस्कृरिसुत्तुदावरे ?

उः कवि मातृभूमि को प्रणाम कर रहे हैं।

कवि म्हात्रभूमीयन् नमस्कृरिसुत्तुदावरे.

2. भारत माँ के हाथों में क्या है ?

भारतम्हातेय कैगळली एनीवे ?

उः भारत माँ के हाथों में न्याय पताका तथा ज्ञान-दीप हैं।

भारतम्हातेय कैगळली नाईयङ्गज मुत्तु छान दीपवीदे.

3. आज भारत माँ के साथ कौन है ?

ज०दु भारतम्हातेय०दिगौ यारिदावरे ?

उः आज भारत माँ के साथ कोटि-कोटि भारतवासी हैं।

ज०दु भारतम्हातेय०दिगौ कौ०षि कौ०षि भारत०य०रिदावरे.

4. सभी ओर क्या गूंज उठा है ?

एलैंडे एनु प्रतिध्वनीसुक्ति दे ?

उ: सभी ओर जय-हिंद के नाद का गूंज उठा है।

एलैंडे 'जै छौंदा' द ध्वनीयु प्रतिध्वनीसुक्ति दे.

5. भारत के खेत कैसे हैं ?

भारत द हौलगळु होगिवे ?

उ: भारत के खेत हरे-भरे तथा सुहाने हैं।

भारत द हौलगळु हसिरन्नु तुंबिकै०० दु सुंदरवागि कंगेलीसुक्तिवे.

6. भारत भूमि के अंदर क्या-क्या भरा हुआ है ?

भारत द भूमियौजगदे एनेनु तुंबिकै०० दिवे ?

उ: भारत भूमि के अंदर खनिजों का व्यापक धन भरा हुआ है।

भारत द भूमियौजगदे अपारवाद विनिज संपन्नूलगिवे.

7. सुख-संपत्ति, धन-धाम को माँ कैसे बाँट रही है ?

सुधि संपत्तु धन मुत्तु जरलु आश्रय (मने) वन्नु मातेयु होगे हंचुक्तुदे ?

उ: मुक्त हस्त से माँ सुख-संपत्ति, धन-धाम को बाँट रही है।

मुक्त हस्तदिंद मातेयु एलारिगु सुधि संपत्तु, धन मुत्तु जरलु आश्रय (मने) वन्नु हंचुक्तुदे.

8. 'जय-हिंद' का नाद कहाँ-कहाँ पर गूंजना चाहिए ?

'जै छौंदा' द ध्वनीयु एलैंली प्रतिध्वनीसबैकु ?

उ: 'जय-हिंद' का नाद भारत के सकल नगर और ग्राम में गूंजना चाहिए।

'जै छौंदा' द ध्वनीयु भारत द एला, नगर - ग्रामगळली प्रतिध्वनीसबैकु.

9. जग के रूप को बदलने के लिए कवि किससे निवेदन करते हैं ?

प्रपंचद स्फूर्तूपवन्नु बदलायीसलु कैवि यारन्नु विनंकिसुत्तुरे ?

उ: जग के रूप को बदलने के लिए कवि भारत माता से निवेदन करते हैं।

प्रपंचद स्फूर्तूपवन्नु बदलायीसुवंते कैवि भारत मातेरे विनंकिसुत्तुरे,

10. मातृभूमि कविता के कवि नाम क्या है ?

मातृभूमि कैवितेयु कैवियकैसरु एनु ?

उ: मातृभूमि कविता के कवि नाम भगवतीचरण वर्मा है।

मातृभूमि कैवितेयु कैविय कैसरु भगवति जरूर वर्मा .

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखना :-

प्रश्न 1 . भारत माँ के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए ?

भारत मातेयु प्रकृति सौंदर्यवन्नु विवरिसे ?

उ • मातृभूमि का प्रकृति सौंदर्य नयन मनोहर है।	• मातृभूमिय प्रकृति सौंदर्यव नयन मनोहरवागिदे.
• भारत माता के खेत हरे-भरे और सुहाने हैं।	• भारत द हौलगळु हसिरन्नु तुंबिकै०० दु सुंदरवागि कंगेलीसुक्तिवे.
• यहा फल फूलों से युक्त वन उपवन है।	• जला हस्तु मुत्तु होवुगळिंद तुंबिद अरजा उदाहनगिवे.
• इस धरती में खनिजों का व्यापक धन है।	• ते भूमियला अपार प्रमाणद विनिज संपन्नूलगिवे.

प्रश्न 2 . मातृभूमि का स्वरूप कैसे सुशोभित है ?

मातृ भूमियं स्फूर्णोऽप्वु हेंगे अलंकृतगोऽदिदे ?

<ul style="list-style-type: none"> उ • मातृभूमि अमरों की जननी है। • उसके हृदय में गांधी बुद्ध और राम सोए हुए हैं। • भारत माता के एक हाथ में न्याय पताका है। • दूसरे हाथ में ज्ञानदीप है। • इस प्रकार मातृभूमि का स्वरूप सुशोभित है। 	<ul style="list-style-type: none"> • मातृभूमियं अमररिंगे जन्म निःदिद तायी. • अदर हृदयदलीं गांधी, बुद्ध मृत्युरामरंठक मृक्षानरु मूलगिदाहरै. • भारत मातृत्यं चंद्रु कैयलीं नायंद धृष्टविदे. • ज्ञेष्ठांदु कैयलीं ज्ञानद दीपविदे. • तु रिः मातृभूमियं स्फूर्णोऽप्वन्मु अलंकृतवादिदे.
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 3. मातृभूमि अमरों की जननी है कैसे ? समझाइए ?

मातृभूमियं अमरं जन्मनि यादिदे हेंगे ? तेहि ?

<ul style="list-style-type: none"> उ • मातृभूमि अमरों की जननी है। • उसने अनेक ऐसे महान व्यक्तियों को जन्म दिया है जो आज भी लोगों के मन में अमर हैं। • उसके हृदय में गांधी बुद्ध और राम सोए हुए हैं। • इसलिए वह अमरों की जननी कहते हैं। 	<ul style="list-style-type: none"> • मातृभूमियं अमररिंगे जन्म निःदिद तायी, • ज०दिग्ना जनर मून्सीनलीं अमररागिरुव अ०ठक अ००क मृक्षान् वृत्तीगणी अदु जन्म निःदिदे. • अदर हृदयदलीं गांधी, बुद्ध मृत्युरामरंठक मृक्षानरु मूलगिदाहरै • अदक्षुगी मातृभूमियन्मु अमरं जन्मनि एंद्रु कर्त्युत्तुरै.
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

III . अनुरूपता :-

1. वसीयत : नाटक :: चित्रलेखा : उपन्यास
2. शत-शत : द्विरुक्ति :: हरे-भरे : युग्म
3. बायें हाथ में : न्याय पताका :: दाहिने हाथ में : ज्ञान का दीप
4. हस्त : हाथ :: पताका : झण्डा
5. अभिनव मनुष्य : रामधारीसिंह दिनकर :: मतृभूमि : भगवतीचरण वर्मा.
6. तुलसी के दोहे : रामभक्ति की झलक :: मतृभूमि : देशप्रेम की झलक
7. शूर-शाम : कृष्ण की बाललिला का वर्णन :: मतृभूमि : भारत माता का वर्णन
8. कर्नाटक संपदा : महान व्यक्तियों का स्मरण :: मतृभूमि : महान विभूतियों का स्मरण
9. पताका : न्याय का प्रतिक :: दीप : ज्ञान का प्रतीक

IV. दोनों खंडों को जोड़कर लिखिए :-

अ	ब	उत्तर :-
1. तेरे उर में शायित	वन, उपवन	1. गांधी, बुद्ध और राम
2. फल - फूलों से युत	आज साथ में	2. वन, उपवन
3. एक हाथ में	कितना व्यापक धन	3. न्याय-पताका
4. कोटि-कोटि हम	शत-शत बार प्रणाम	4. आज साथ में
5. मातृ-भू	न्याय-पताका	5. शत-शत बार प्रणाम

V. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :-

1. कवि मातृभूमि को शत-शत बार प्रणाम कर रहे हैं।
2. भारत माँ के उर में गाँधी, बुद्ध और राम शायित है।
3. वन उपवन फल - फूलों से युक्त है।
4. मुक्त हस्त से मातृभूमि सुख-संपत्ति बाँट रही है।
5. सभी ओर जय-हिन्द का नाद गूंज उठे।

VI. भावार्थ लिखिए :-

एक हाथ में न्याय-पताका,
ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में,
जग का रूप बदल दे, हे माँ,,
कोटि-कोटि हम आज साथ में।
गूंज उठे जय-हिन्द नाद से
सकल नगर और ग्राम।
मातृ -भू. शत-शत बार प्रणाम।

उत्तरः इन उपर्युक्त पंक्तियों को भगवती चरण वर्मा लिखित मातृभूमि पद्म से लिया गया है। कवि भारत माता के स्वरूप के बारे में कहते हैं कि भारत माता के एक हाथ में न्याय का पताका है और दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है। इन दोनों के सहायता से हे माँ जग का रूप बदल दें, कोटि-कोटि भारत वासी आज तेरे साथ है इस प्रकार निवेदन करते हैं और भारत के सकल नगर और ग्राम में जय हिन्द का नाद गूंजना चाहिए। हे मातृभूमि तुम्हें सौ सौ बार प्रणाम करता हूं कहते हैं।

ఈ మేల్కుండ సాలుగళన్న భగవతి జరణ వమారివరు ఒరదిరువ మాతృభూమి పద్మదింద ఆయ్యుకోళ్లాగివే. కవి భారండ ప్రాక్కుతిక సౌందయివన్న విషిసుత్తు హేళుత్తురే భారం మాతేయ ఒందు కైయల్లి నాయిద ధ్వజ మత్తు ఇనొస్సిందు కైయల్లి ఛ్ళానద దీపవిదే . ఈ మాతే ఇప్పగళ సహాయదింద జగత్తున రూపవన్న బదలేను ఎందు వినంతిసుత్తు. సకల నగర మత్తు గ్రామగళల్లి జయ కొందద ధ్వజియు ప్రతిధ్వనిసలి . హే మాతృభూమి నినే నూరారు బారి నమనగళన్న అపిసుత్తేనే ఎందు హేళుత్తురే.

VII. पद्म भाग पूर्ण कीजिए :-

- हरे-भरे हैं खेत सहाने , फल-फूलों से युत वन-उपवन।
तेरे अंदर भरा हुआ है खनिजों का कितना व्यापक धन।
मुक्त-हस्त तू बाँट रही है सुख-संपत्ति, धन-धाम,
मातृ -भू. शत-शत बार प्रणाम।

“ಮಾತೃಭೂಮಿ”

ಕವಿತೆಯ ಕನ್ನಡ ಸಾರಾಂಶ

”ಮಾತೃಭೂಮಿ” ಈ ಕವಿತೆಯನ್ನು ಭಗವತಿ ಚರಣ ವರ್ಮಾ ರವರು ದೇಶಭಕ್ತಿ ಗೀತೆ ರೂಪದಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದಾಗ್ಯದೆ. ಹಲವು ಉದಾಹರಣೆಗಳ ಮೂಲಕ ಭಾರತ ಎಷ್ಟು ಭವ್ಯ ರಾಷ್ಟ್ರ ಎಂಬುದನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಲು ಕವಿ ಯತ್ನಸಿದ್ಧಾಂತ ಮತ್ತು ಈ ಕವಿತೆಯಲ್ಲಿ ಮಾತೃಭೂಮಿಯನ್ನು ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಹಾಡಿಹೊಗಿದಾಗ್ಯದೆ.

ಕವಿ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ ಹೇ ಮಾತೃಭೂಮಿ, ನಿನಗೆ ನೂರಾರು ಬಾರಿ ನಮನಗಳನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವೆನು. ನಿನ್ನ ಪವಿತ್ರವಾದ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಗಾಂಧಿ, ಬುದ್ಧ ಮತ್ತು ರಾಮ ರಂತಹ ಮಹಾಮಹಿಮರು ಜನ್ಮ ಪಡೆದಿದಾಗ್ಯದೆ. ಇವರು ಭಾರತದ ಹಿರಿಮೆಯನ್ನು ಇಡೀ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಪರಿಚಯಿಸಿದಾಗ್ಯದೆ. ಅದಕಾಗಿ ಮಾತೃಭೂಮಿಯನ್ನು ಆಮರರ ಜನನಿ ಎಂದು ಕರೆಯುತ್ತಾರೆ. ಇಂತಹ ಆಮರರಾದ ಶ್ರೀಷ್ಟ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ತಾಯಿಯೇ ನಿನಗೆ ಶತ ಶತ ನಮನಗಳನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತೇನೆ.

ಹಾಗೆಯೇ ವರ್ಮರವರು ಭಾರತದ ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿನ ಸುಂದರವಾದ ಹೊಲ-ಗದೆಗಳು ಹಸಿರಿಸಿದ ಕೂಡಿದೆ. ಹಣ್ಣು ಹಂಪಲು ಹಾಗೂ ಹೂವುಗಳಿಂದ ಶೋಭಿಸುವ ಈ ಪವಿತ್ರ ಭೂಮಿ ಭಾರತದ ವೈಭವವನ್ನು ಸೂಚಿಸುತ್ತದೆ. ಭಾರತದ ಧರೆಯಲ್ಲಿ ಆಪಾರವಾದ ಖನಿಜ ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳು ದೊರಕುವ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ನಮ್ಮ ದೇಶ ಬ್ರಹ್ಮಯ್ಯ ಭರಿತ ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಹೇ ಭಾರತ ಮಾತೇ, ನಿನ್ನ ಮುಕ್ತ ಹಸ್ತಗಳಿಂದ ಜನರಿಗೆ ಸುಖ-ಸಮೃದ್ಧ ಹಾಗೂ ಧನ ಹಾಗೂ ಇರಲು ಆಶ್ರಯ (ಮನೆ) ವನ್ನು ಒದಗಿಸುತ್ತಿದ್ದೀರ್ಯಾ ಆದ್ದರಿಂದ ತಾಯಿ ನಿನಗೆ ಶತ ಶತ ನಮನಗಳನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.

ಹೇ ಭಾರತ ಮಾತೆಯೇ ನೀನು ನಾತಯ ಪ್ರಿಯಳಾದ್ದರಿಂದ ನಿನ್ನ ಒಂದು ಕೈಯಲ್ಲಿ ನಾತಯ ಧ್ವಜವಿದೆ ಹಾಗೆ ಅಳ್ಳಾನದ ಅಂಥಕಾರವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಝ್ಫಾನದ ಬೆಳಕನ್ನು ಚೆಲ್ಲಲು ನಿನ್ನ ಇನ್ನೊಂದು ಕೈಯಲ್ಲಿ ಝ್ಫಾನದೀಪ ವಿದೆ. ಇವುಗಳ ಸಹಾಯದಿಂದ ಜಗತ್ತಿನ ರೂಪವನ್ನು ಬದಲಿಸು ತಾಯಿ ನಿನ್ನ ಜೊತೆ ಕೋಟಿ ಕೋಟಿ ಜನರು ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಇದ್ದೇವೆ. ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ರ ಜೈ ಹಿಂದ್ರ ದ ಧ್ವನಿಯು ಎಲಾಲ್ಲ ನಗರ ಗ್ರಾಮಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ ಸಲಿ . ಇಂತಹ ಮಾತೃಭೂಮಿಗೆ ನನ್ನ ನೂರಾರು ಬಾರಿ ನಮನಗಳನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುತ್ತೇನೆ ಎಂದು ಕವಿ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

पाठ 2 - कश्मीरी सेब {च०ठ०१० नं० च०४८०}



पाठ का आशय :- लेखक अपना अनुभव बताते हुए पाठकों को सचेत करते हैं कि अगर खरीदारी करते समय सावधानी नहीं बरतें तो धोका खाने कि संभावना होती है।

अ कैँदैं मूलक लैविकरु डन् अनुभववन् हैंजुत्तु वसुगैन्
विरैदिस्वाग जागरूकराइदूरै मौजै हैंगुव नाफैंगैरुत्तुवै एंदु
चंदगरीं वज्जैरिस्वत्तुरै।

लेखक का परिचय - मुंशी प्रेमचंद

जन्म :- 31 जुलाई 1880

स्थल :- वारणासी के पास लमही गाँव में हुआ।

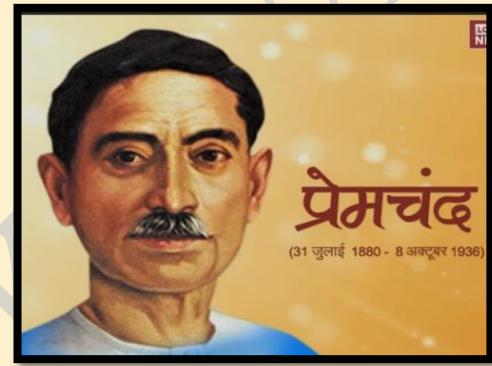
शिक्षा :- वे मेट्रिक तक ही पढ़ पाये।

वास्तविक नाम :- इनका वास्तविक नाम धनपतराय था।

रचनाएँ : उपन्यास :- गोदान, सेवासदन, गबन, निर्मला, कर्मभूमि

कहानी संग्रह :- बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, पंच परमेश्वर, पूस की रात आदि

प्रेमचंद की कहानियाँ 'मानस सरोवर' नाम से संकलित हैं।



शब्दार्थ :-	सावधानी - वज्जैरिकै	गाजर - गज्जरि	नज़र - दृष्टिपै	नीमकौड़ी - चैविन वण्ण
	सुराख - छेद - रंदू, डूँडू	बेर - भारैंवण्ण	आम - मावू	भांप लेना - गुरुतिसुवृद्धु
	मोल - भाव - चैंल	स्वाद - रुचि- रुचि	लौंडा - घुड़ग	मेवा फरोश - वण्ण मारुवव
	तराजू - डेक्कूदि	कायदा - घदूँठि	गलना - करगुवृद्धु	बेदाग - कलै जलूदिरुविकै
	रेवड़ी - वैजून विठायी	साख - वृद्धकार	चौकस - वज्जैरिकै	छटाक - नैरिन 16नै भाग

1. एक वाक्य में उत्तर लिखना :-

1. प्रेमचंद जी चीजें खरीदने कहाँ गये थे?

प्रैमचंद रवरु वसुगैन् विरैदिसलु एलैगै हैंगिदूरु?

उ. प्रेमचंद जी चीजें खरीदने चौक के एक दुकान गये थे।

प्रैमचंद रवरु वसुगैन् विरैदिसलु सक्फला नलैरुव चंदु अंगिगै हैंगिदूरु.

2. प्रेमचंद जी चौक में क्यों गये थे?

प्रैमचंद रवरु एक सक्फला हैंगिदूरु?

उ. प्रेमचंद जी चौक में दो-चार जरूरी चीजें खरीदने गये थे।

प्रैमचंद रवरु 2-4 अंगूष्ठविरुव वसुगैन् विरैदिसलु सक्फला हैंगिदूरु.

3. प्रेमचंद जी को दूकान पर क्या नजर आये ?

प੍ਰੇਮचंद रवरिंग अंगड़ियल, फनु कंडुबंदवु ?

उ: प्रेमचंद जी को दूकान पर सजे हुए रंगदार गुलाबी सेब नजर आये ।

प੍रੇਮचंद रवरिंग अंगड़ियल, अलंकरिसिद गुलाबी बछाद सैभुगंजु कंडुबंदवु.

4. प्रेमचंद जी का जी क्यों ललचा उठा ?

प੍रੇमचंद रवरिंग फनन्मू कौजुव घनसान्नितु ?

उ: दुकान में सजे हुए रंगदार गुलाबी सेब देखकर प्रेमचंद का जी ललचा उठा ।

प੍रੇमचंद रवरिंग अंगड़ियल, अलंकरिसिद गुलाबी बछाद सैभु हण्डन्मू नैरै, कौजुव घनसान्नितु.

5. टोमाटो किसका आवश्यक अंग बन गया है ?

चौमेचौ यावुदर अवश्यकवाद अंगवारिद ?

उ: टोमाटो भोजन का आवश्यक अंग बन गया है ।

चौमेचौ भौजनद अवश्यकवाद अंगवारिद.

6 . आज भोजन का आवश्यक अंग कौन बन गया है ?

ज०दु यावुदु भौजनद अवश्यकवाद अंगवारिद?

उ: आज भोजन का आवश्यक अंग टोमाटो बन गया है।

ज०दु चौमेचौ भौजनद अवश्यकवाद अंगवारिद.

7. स्वाद में सेब किससे बढ़कर नहीं ?

रुजियल, सैभु यावुदकू०ठ हैचौल ?

उ: स्वाद में सेब आम से बढ़कर नहीं।

रुजियल, सैभु घावुगी०ठ हैचौल.

8. आज सेब को किस-का स्थान मिल चुका है ?

ज०दु सैभु याव साफनवन्मू घदेदुकौ०दिद?

उ: आज सेब को आम-का स्थान मिल चुका है।

ज०दु सैभु घावन साफनवन्मू घदेदुकौ०दिद.

9. रोज एक सेब खाने से हमें किनकी जरूरत नहीं होगी ?

ज०दु सैभु दिन ती०दरै नमगं यार अगड़ै जरुवुदिल ?

उ: रोज एक सेब खाने से डाक्टरों की जरूरत नहीं होगी।

ज०दु सैभु दिन ती०दरै नमगं छाकूरा र अगड़ै जरुवुदिल .

10. पहले गरीबों की पेट भरने की चीज क्या थी ?

यावुदु मौदलु बदवर हौचै डु०बव घस्तुवागितु ?

उ: पहले गरीबों की पेट भरने की चीज गाजर थी।

गज्जरिया मौदलु बदवर हौचै डु०बव घस्तुवागितु .

11. प्रेमचंद जी दूकानदार से कितने सेर सेब माँगे ?

प੍रੇਮचंद रवरु अंगड़ि मालै०कनी०द एम्प सैरु सैभुगंजन्मू कै०॒दरु?

उ : प्रेमचंद जी दूकानदार से आधा सेर सेब माँगे।

प੍रੇमचंद रवरु अंगड़ि मालै०कनी०द अर्फ सैरु सैभुगंजन्मू कै०॒दरु.

12. फल खाने का उचित समय क्या है ?

हजार तिनुव्वे सरियाद समय यावृद्धु?

उ: फल खाने का उचित समय तो प्रातःकाल है।

हजार तिनुव्वे सरियाद समय मुंजाने आग्रहत्वदेहि.

13. आदमी बईमानी कब करता है ?

मनुष्णनु यावाग मौसनु (वंजने) मादुत्तुने?

उ: आदमी बईमानी तभी करता है। जब उसे अवसर मिलता है।

मनुष्णनु डनग अवकाश स्कार्ग मौसनु (वंजने) मादुत्तुने .

14. प्रेमचंद ने मोहर्रम के मेले में एक दूकानदार से क्या खरीद ली थीं ?

प्रेमचंद रवरु मौकरं जात्रैयल, चंदु अंगडियवनिंद एननु विरोदिसिद्धरु ?

उ: प्रेमचंद ने मोहर्रम के मेले में एक दूकानदार से रेवडियाँ खरीद ली थीं।

प्रेमचंद रवरु मौकरं जात्रैयल, चंदु अंगडियवनिंद एजनु मिठायियनु विरोदिसिद्धरु.

15. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या था ?

प्रेमचंद रवर निजवाद हेसरेनु?

उ: प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय था।

प्रेमचंद रवर निजवाद हेसरु धनपतराय .

16. प्रेमचंद जी की कहानियाँ किस नाम से संकलित हैं ?

प्रेमचंद रवर कफेलु याव हेसरिनिंद संकलित गोंदिवे ?

उ: प्रेमचंद जी की कहानियाँ मानसरोवर नाम से संकलित हैं।

प्रेमचंद रवर कफेलु मानस सरोवर हेसरिनिंद संकलित गोंदिवे.

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखना :-

1. आज कल शिक्षित समाज में किसके बारे में विचार किया जाता है ?

ज०दु विदाव्वंत समाजदल, यावृदर बगू यौजिसलागुत्तुदे ?

उ: आज शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के बारे में विचार किया जाता है।

• विटामिन और प्रोटीन स्वस्थ और तंदुरुस्ती के लिए बहुत लाभदायक है।

उ: ज०दु विदाव्वंत समाजदल, विटमिन दुम्तु

प्रौद्योगिकी गज बगू यौजिसलागुत्तुदे.

• विटमिन दुम्तु, प्रौद्योगिकी गज साप्सक्तु दुम्तु आरोग्य द दृष्टियिंद बजल प्रयोजनकारियावे.

2 . दूकानदार ने लेखक से क्या कहा ?

अंगडिकारनु लैविकरिंग एननु कैजिदनु ?

उ: दूकानदार ने लेखक (प्रेमचंद) से कहा -

- बाबूजी, बडे मजेदार सेब आए हैं।
- खास कश्मीर के हैं।
- आप सेब ले जाइए।
- खाकर तबीयत खुश हो जायेगी।

उ: अंगडिकारनु लैविकरिंग कैजिदनु .

- साहेबरे बजल साप्दिष्टवाद सैबुगजु चंदिवे.
- विशेषवागि कात्रैरदिंद चंदिरुव्वुदु.
- नीवु सैबुगजुनु तैगेदुकैलु हौरी .
- तिंदु निम्न आरोग्यवु सुधारिसुत्तुदे.

3 . दूकानदार ने अपने नौकर से क्या कहा ?

अंगडिकारनु डन् नोकरनीगै एनन् हैजैदनु?

- | | |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> दूकानदार ने तराजू उठायी। अपने नौकर से कहा सुनो। आधा सेर कश्मीर सेब निकाल ला। चुनकर लाना। | <ul style="list-style-type: none"> अंगडिकारनु डक्कडियन् एत्तिदनु. डन् नोकरनन् कर्दै हैजैत्तुने. अधर्सैरु काश्मीरै सैबु तैमैकैलै चा. बैजैयैदन् आरीसै ता. |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

4 . सेब के विषय में आजकल क्या कहा जा रहा है ?

जैशिन दिनगलीला सैबिन बगैर एनन् हैजैलागैत्तिदै ?

- | | |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> सेब के विषय में आज कल कहा जा रहा है कि रोज एक सेब खा लिया तो डाक्टरों की जरूरत न रहेगी। आज सेब को रस और स्वाद में आम की बरावर स्थान मिला है। इससे शरीर को विटामिन और प्रोटीन मिलता है। | <ul style="list-style-type: none"> जैदू सैबुविन बगैर हैजैलूवृद्धादरै, बैदू सैबु दिन तिंदरै डाक्टरौ र अग्त्यै जरूवृदिला. जैदू सैबु रस मूत्तु रुचियला, माविनैोंदिगै समान साफनवन् पैदैदुकैलै. अै हैलीनैंद दैहवृ विटमिनौ मूत्तु वैलैटैनौ गैलन् पैदैदुकैलूत्तुरै. |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

5. "कश्मीरी सेब" कहानी से आपको क्या सीख मिलती है ?

काश्मीरै सैबौ कँधैयैंद निमैं याव प्पाठ सिंगृत्तुदै?

- | | |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> 'कश्मीरी सेब' कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि - खरीदारी करते समय सावधानी बरतें। सावधानी नहीं बरतें तो धोखा खाने की संभावना होती है। साथ ही विटामिन और प्रोटीन के लाभ। | <ul style="list-style-type: none"> काश्मीरै सैबु अै कँधैयैंद नावै कैलियूवृद्धैनैंदरै – वस्तुगलन् विरीदिसुवाग नावै जागरूकरागिरचैकु. जागरूकरागिरदैदूरै मैलैनै हैलैवै साधृतैगैलै. जैदैरैोंदिगै, विटमिनौ मूत्तु वैलैटैनौ लाभ. |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

6 . सेब के हालत के बारे में लिखिए ?

नैम्बुगै नैतिगतिगै बगैर बरैयीरि ?

- | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> लेखक प्रेमचंद नाश्ता करने के लिए सेब निकाला। पहला सेब एक रुपए के आकार का छिलका गल गया था। दूसरा सेब निकाला आधा सड़ा हुआ था। तीसरा सेब एक तरफ दबकर पिचक गया था। चौथा सेब काटा तो भीतर काला सुराख था। एक सेब भी खाने लायक नहीं थथा। | <ul style="list-style-type: none"> लैैकरु बैलैन उपाहारकापौरी सैबन् हैैरतैगैयूत्तुरै मैदलनै सैबु बैदू रूपायी आकारदै सिपैंपै कैलैदैकैलैतु.. एरदनै सैबु अधर्सै कैलैतु हैलैगैतु. मूरनै हैलै, बैदू कैदै जज्जै संपूर्णै कैलैतु हैलैगैतु. नालूनैयै सैबिनला, कैलैपै रैंदैवैतु. बैदू सैबु कैलै तिन् लु यैलैवैवागिरलैला. |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

III. विलोम शब्द लिखिए :-

अ	ब	उत्तर :-
1) सेब को रुमाल में बांदकर	अ) प्राथःकाल है।	आ) मुझे दे दिया
2) फल खाने का समय तो	आ) मुझे दे दिया।	अ) प्राथः काल है।
3) एक सेब भी खाने	ई) बनी हुई थी।	इ) लायक नहीं।
4) व्यापारियों की साख	इ) लायक नहीं।	ई) बनी हुई थी।

IV. जोड़कर लिखिए :-

1. शाम x सुबह	6. आवश्यक x अनावश्यक	11. बेर्इमान x ईमान
2. खरीदना x बेचना	7. गरीब x अमीर	12. विश्वास x अविश्वास
3. बहुत x थोड़ा	8. रात x दिन	13. सहयोग x असहयोग
4. अच्छा x बुरा	9. संदेह x निःसंदेह	14. हानि x लाभ
5. शिक्षित x अशिक्षित	10. साफ x गंदा	15. पास x दूर
		16. गम x खुशी

V. अनुरूपता :-

1. केला : पीला रंग :: सेब :-----लाल रंग
2. सेब : फल :: गाजर :-----सब्जी
3. नागपूर : संतरा :: कश्मीर :-----सेब
4. कपड़ा : नापना :: टोमाटो :-----तोलना
5. कर्नाटक संपदा : निबंध :: कश्मीरी सेब :-----कहानी
6. सेब बेचनेवाला : बेर्इमान निकला :: रेवड़ियाँ बेचनेवाला :-----ईमानदार निकला
7. मेरा बचपन : अब्दुल कलाम :: कश्मीरी सेब :-----प्रेमचंद
8. निमकौड़ी : कडुवा :: कश्मीरी सेब :-----मीठा
9. गोदान : उपन्यास :: पंच परमेश्वर :-----कहानी
10. सेब : कश्मीर :: संतरा :-----नागपुर

VI. अन्य वचन लिखिए :-

1. चीजें - चीज	6. आँखें - आँख
2. रास्ता - रास्ते	7. कर्मचारी - कर्मचारी वर्ग
3. फल - फल	8. व्यापारी - व्यापारी वर्ग
4. घर - घर	9. रेवड़ी - रेवड़ियाँ
5. रुपए - रुपया	10. दुकान - दुकानें

VII . निम्नलिखित वाक्यों को सही क्रम से लिखिए :

- 1) गाजर गरीबों भी पहले के पेट की चीज भरने थी ।
- 1) गाजर भी पहले गरीबों की पेट भरने की चीज थी ।
- 2) अब चीज नहीं है वह केवल स्वाद की।
- 2) अब वह केवल स्वाद की चीज नहीं है ।
- 3) नहीं लायक खाने भी सेब एक ।
- 3) एक सेब भी खाने लायक नहीं ।
- 4) मालूम हुई घर आकार अपनी भूल ।
- 4) घर आकार अपनी भूल मालूम हुई ।

VIII. अपनी मातृभाषा कब्ज़ या अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :

1) एक सेब भी खाने लायक नहीं था।
ઓંડુ સેબુ કોડા તિન્હુલૂ યોંગ્ફારલીલા.

Not even an apple was worth eating

2) दुकानदार ने मुझसे क्षमा मांगी।
અંગારિયા નન્હુલી ક્રૂમે હેણીદ.
The shopkeeper asked me to apologize .

3) गाजर भी पहले गरिबों के पेट भरने की चीज थी।
ગજ્જરિયુ કોડા મોદલિં બડવર હોટેપ તુંબિસુવ વસ્તુવાળીતુ.

Carrot was also a thing to fill the stomach of the poor.

4) दुकानदार ने कहा बडे मजेदार सेब आये है।
બહલ છોટી સેબુગલું બંદિવે ઎ંદુ અંગારિયાનુ હેણીદનુ.
The shopkeeper said there were very good apples.

કેન્દ્રદરલી સારાંશ :- કાશ્યેરિન સેબુહણ્ણુ

કાશ્યેરિન મૂલક લેખકરું તેન્હું સ્પેન્થ અનુભવવન્હું હેણુંતુ, મારુકટેપ્યાલીલ, જનર જોતે આગુવ મોસદ બગીં તીણી ગ્રાહકરું જાગરૂકરાગીરુવંતે કરે સીકિદાદી

ઓંડુ દિન લેખકરાદ પ્રેમચંદ્ર રવરુ સાયંકાલ 2-4 અગત્યેવિરુવ વસ્તુગલન્હુ વિરીદિસલુ સકલા હોણિદરુ પેંજાબિન હણ્ણું મારાટગારર અંગારિગલુ રસ્તેયલીલ, જદ્વા. ઓંડુ અંગારિયલીલ બજ્જુ ઉલ્લુ હાગું ગુલાબી સેબુગલન્હુ અલંકારવારી જટ્ટીરુવુદુ કેંદુબંદિતુ. મુનસીનલીલ, આસે ઉંઠાયિતુ. જંદિન વિદ્યાવંતર સમાજદાલીલ વિટામિન્સ હાગું પ્રોટીન્સ એંબ શેબ્દિગલ બગીં વિચાર માદુવ પ્રવૃત્તિ નદેયુંત્રીદે. હોમેપોન્હો હણ્ણન્હુ મોદલુ યારુ કેણુંત્રીરલીલ, કાગ ચોમેપોન્હો હણ્ણું ભોજનકેંક અવત્યકવાદ અંગવાગીદે. ગજ્જરિયુ સહ મોદલુ બડવરિગે હોટેપ તુંબાવ વસ્તુવાળીતુ આ શ્રીમંતરુ અદર હલાએ માત્રવે તિન્હુંત્રીદરુ; આદરે કાગ તીણીદુબંદિરુવુદુ એનેંદરે ગજ્જરિયલૂ, સહ બહલું વિટામિન્સ ગણીવે. આદરિંદ ગજ્જરિગણું સહ સાફન દોરશીદે.

ಸೇಬಿನ ಬಗ್ಗೆ ಹೇಳುವುದೇನೆಂದರೆ ಒಂದು ಸೇಬನ್ನು ದಿನ ತಿಂದರೆ ಆಗ ಡಾಕ್ಟರ್ ಹತ್ತಿರ ಹೋಗಲು ಅಗತ್ಯವಿರುವುದಿಲ್ಲ ಡಾಕ್ಟರ್ ರೀಂದ ದೂರವಿರಲು ನಾವು ಬೇವಿನ ಹಣ್ಣನ್ನು ತಿನ್ನಲು ಸಿದ್ಧರಾಗುತ್ತೇವೆ. ಸೇಬಿನ ರಸ ಮತ್ತು ಸಾಫದ ಮಾವಿನ ಹಣ್ಣಗಿಂತ ಹೆಚ್ಚು ಇಲ್ಲದಿದ್ದರು ಅದರ ಮಹತ್ವ ಕಡಿಮೆ ಏನೂ ಇಲ್ಲ. ಸೇಬಿಗೆ ಮಹತ್ವರ ಸಾಫನ ಮೊದಲೇ ದೊರಕಿದೆ. ಈಗ ಈ ಸೇಬುಹಣ್ಣ ರುಚಿಕರ ಆಗಿರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಅದರಲ್ಲ ಸಾಕಮ್ಮ ಗುಣಗಳಿರುತ್ತವೆ. ಲೇಖಕರುಂಗಡಿ ಮಾಲಿಕನ ಹತ್ತಿರ ಹಣ್ಣನ ಬೆಲೆಯನ್ನು ವಿಚಾರಿಸಿ ನನಗೆ ಅಥ ಸೇರು ಸೇಬನ್ನು ಕೊಡಿ ಎಂದು ಕೇಳಿದರು.

ಅಂಗಡಿಯ ಮಾಲಿಕ ಹೇಳಿದನು “ಯಜಮಾನರೆ ” ಬಹಳ ರುಚಿಕರವಾದ ಸೇಬುಗಳು ಒಂದಿವೆ. ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಕಾಶ್ಶೀರದಿಂದ”. ನೀವು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಇದನ್ನು ತಿಂದರೆ ನಿಮ್ಮ ಆರೋಗ್ಯ ಸುಧಾರಿಸುತ್ತದೆ (ಕುಷಿಯಾಗುತ್ತದೆ). ಲೇಖಕರು ಕಚ್ಚಿಫ್ ಅನ್ನ ತೆಗೆಯುತ್ತ ಆತಸಿಗೆ ಕೊಡುತ್ತ ಹೇಳಿದರು. ಒಂದೊಂದು ಆರಿಸಿ ಇಡಿ.

ಅಂಗಡಿ ಮಾಲಿಕನು ತಕ್ಷಾಡಿಯನ್ನು ಎತ್ತಿ ತನ್ನ ಕೆಲಸಗಾರನಿಗೆ ಹೇಳಿದನು “ಕೇಳು ಅಥ ಸೇರು ಕಾಶ್ಶೀರದ ಸೇಬಿನ ಹಣ್ಣನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬಾ, ಆರಿಸಿಕೊಂಡು ತಾ. ಅಂಗಡಿ ಕೆಲಸಗಾರ ಹುಡುಗ ನಾಲ್ಕು ಸೇಬನ್ನು ತಂದನು ಅಂಗಡಿ ಮಾಲಿಕ ಅಪುಗಳನ್ನು ತೂಕ ಮಾಡಿದನು ಹಾಗೂ ಅಪುಗಳನ್ನು ಒಂದು ವೇಪರ್ ಕವನಲ್ಲಿ ಹಾಕಿ ಕಚ್ಚಿಫ್ ನಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿ ಲೇಖಕರಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಿನು, ಆಗ ಅವರು ನಾಲ್ಕಾಳಿ ಆತನ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟರು. ಲೇಖಕರು ಮನಸೆ ಒಂದು ಸೇಬು ಇರುವ ಕವರನ್ನು ಹಾಗೆಯೇ ಇಟ್ಟರು. ರಾತ್ರಿಯ ಹೊತ್ತು ಸೇಬು ಅಥವಾ ಇತರೆ ಹಣ್ಣಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು ನಿಯಮವೇನು ಇಲ್ಲ. ಹಣ್ಣ ತಿನ್ನುವ ಸರಿಯಾದ ಸಮಯ ಮುಂಜಾನೆ ಆಗಿರುತ್ತದೆ.

ಮಾರನೇ ದಿನ ಲೇಖಕರು ಮುಂಜಾನೆ ಎದ್ದು ಕ್ಯೆ ಮುಖಿ ತೊಳಿದುಕೊಂಡು ತಿಂಡಿ ತಿನ್ನಲು ಹೋಗಿ ಒಂದು ಸೇಬನ್ನು ತೆಗೆದಾಗ ಅದು ಒಂದು ರೂಪಾಯಿ ಆಕಾರದ ಸಿಪ್ಪೆ ಕಳಿದುಕೊಂಡಿತ್ತು. ಆಗ ಅವರು ಯೋಚಿಸಿದರು ರಾತ್ರಿಸಮಯವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಅಂಗಡಿ ಮಾಲಿಕ ಬಹುವ ನೋಡಿಲ್ಲ. ಎರಡನೇ ಸೇಬು ತೆಗೆದಾಗ ಅದು ಅಥ ಕೊಳಿತು ಹೋಗಿತ್ತು. ಆಗ ಅವರಿಗೆ ಸಂಶಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಅಂಗಡಿ ಮಾಲಿಕ ನನಗೇನು ಮೋಸ ಮಾಡಿದಾಗಿನೆ ಎಂದು.. ಮೂರನೇ ಹಣ್ಣ ಒಂದು ಕಡೆ ಜಚ್ಚಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಕೊಳಿತು ಹೋಗಿತ್ತು. ನಾಲ್ಕುನೇ ಹಣ್ಣನ್ನು ತೆಗೆದಾಗ ಅದರ ಮೇಲೆ ಯಾವುದೇ ರೀತಿಯ ಕಲೆ ಇರಲಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಅದರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಕಪ್ಪು ರಂದ್ರ ವಿತ್ತು ಹೇಗೆ ಎಂದರೆ ಬೋರೆ ಹಣ್ಣನ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಇತ್ತು. ಆ ಹಣ್ಣನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದಾಗ ಯಾವ ರೀತಿ ಬೋರೆಹಣ್ಣನಲ್ಲಿ ಕಲೆ ಇರುತ್ತದೆ. ಅದರಲ್ಲಿ ಆ ರೀತಿ ಇತ್ತು. ಒಂದು ಸೇಬು ಹಣ್ಣನ್ನು ಸಹ ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರಲಿಲ್ಲ. ನಾಲ್ಕುಷಿ ಪೈಸೆ ನಷ್ಟವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ದುಃಖವೇನೂ ಆಗಲಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಈ ರೀತಿ ನಡತೆಯಲ್ಲಿ ಕುಸಿತ ಉಂಟಾಗಲು ಆ ರೀತಿ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ದುಃಖವಾಯಿತು. ಆಗ ಲೇಖಕರು ಯೋಚಿಸುತ್ತಾರೆ ಅಂಗಡಿ ಮಾಲೀಕನು ಉದ್ದೇಶಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ನನಗೆ ಮೋಸ ಮಾಡಿದಾಗಿನೆ. ಒಂದು ವೇಳೆ ಒಂದು ಸೇಬು ಕೊಳಿತರೆ ಅದನ್ನು ನಾನು ಕ್ಷಮಿಸಬಹುದು ಎಂದು ಅಥಮಾಡಿಕೊಂಡೆ ಬಹುಪ ಆತ ನೋಡಿಲ್ಲ. ಎಂದು ಭಾವಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಆದರೆ ನಾಲ್ಕು ಸೇಬು ಕೆಟ್ಟಿ ಹೋಗಿರುವುದರಿಂದ ನಮಗೆ ವಂಚನೆ ಆಗಿರುವುದು ಸ್ವಪ್ಷವಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ಈ ಮೋಸ ವಂಚನೆಯಲ್ಲಿ ನನ್ನದು ಸಹ ಸಹಕಾರ ಇತ್ತು. ನಾನು ಅಂಗಡಿ ಮಾಲಿಕನ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಕಚ್ಚಿಫ್ನ್ನು ಇಡುವುದು ಆತಸಿಗೆ ಮೋಸಮಾಡುವುದಕ್ಕೆ ಒಂದು ಪೈರಣಿವಾಗಿತ್ತು.

ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಈ ರೀತಿ ಇರಲಿಲ್ಲ. ವಾತಾವಾರಸಫರಿಗೆ ಸಾಕಮ್ಮ ಗೌರವವಿತ್ತು ತೂಕದಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಮೋಸ ಇರಲಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ತಪಾಗಿ 5 ರ ಜಾಗದಲ್ಲಿ, 10 ರೂಪಾಯಿ ನೀಡಿದರೆ ನೀವು ಗಾಬರಿ ಪಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇಲ್ಲ, ನಿಮ್ಮ ಹಣ ಸುರಕ್ಷಿತವಾಗಿರುತ್ತಿತ್ತು. ಈ ಸಂಭರ್ಥದಲ್ಲಿ, ಲೇಖಕರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ ನನಗೆ ನೆನಪಿದೆ ಒಂದು ಮೋಹರಮ್ ದಿನ ಜಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಅಂಗಡಿಯವನಿಂದ ಒಂದು ಪೈಸೆಗೆ ಎಳಿಂ ಮಿತಾಯಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿದೆ. ಒಂದು ಪೈಸೆ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಎಂಟಾಣ ಕೊಟ್ಟಿ ಬಂದಿದೆ. ಮನಗೆ ಬಂದಾಗ ನನ್ನ ತಪ್ಪು ಅರಿವು ಆದಾಗ ಅಂಗಡಿಯ ಬಳಿ ಓಡಿ ಬಂದಿನು. ಅವನು ನನಗೆ ಎಂಟಾಣ ಕೊಡುತ್ತಾನೆಂದು ಭಾವಿಸಿರಲಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಅವನು ನನಗೆ ಎಂಟಾಣಿಯನ್ನು ಸಂತೋಷವಾಗಿ ಹಿಂದಿರುಗಿಸಿದನು ಹಾಗೂ ನನ್ನಿಂದ ಕ್ಷಮೆ ಕೇಳಿದನು. ಇಲ್ಲಿ, ನೋಡಿದಾಗ ಕಾಶ್ಶೀರ ಸೇಬನ್ನು ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ, ಕೊಳಿತರುವ ಸೇಬನ್ನು ಮಾರಾಟ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

ಲೇಖಕರು ಆಶಿಸುವುದೇನೆಂದರೆ ಓದುಗಾರರು ಮಾರುಕಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಹಾಗೆ ಕಣ್ಣಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಖಿರೀದಿ ಮಾಡಬಾರದು ಹಾಗೆಯೇ ಒಂದು ವೇಳೆ ಮಾಡಿದರೆ ಅವರಿಗೂ ಸಹ ಕಾಶ್ಶೀರದ ಸೇಬು ಸಿಗುತ್ತವೆ ಎಂದು ಈ ಮೂಲಕ ಎಚ್ಚರಿಸಿದಾರೆ.

पाठ ३ - गिलहरी {उड़ीय मरी}



पाठ का आशय :- कौन कह सकते हैं कि पशु पक्षी भावहीन प्राणी है ? वह भी कभी - कभार हमसे भी अधिक भावातुकूल ,विचारवान और सहदय व्यवहार करते हैं। महादेवी वर्मा ने यह छोटा सा जीव, गिलहरी के बच्चे का रेखांकन कर प्राणी जगत की मानव-सहज जीवन शैली का प्रभावशाली चित्रण किया है। आज के संदर्भ में जहां मानव के स्वार्थ के कारण पशु -पक्षी की जातियां लुत होती जा रही हैं, वहाँ

महादेवी वर्मा जी का यह 'संस्मरण' उनकी रक्षा करने और उनके प्रति प्रेमभाव जगाने की दिशा में एक सार्थक प्रयत्न सिद्ध होता है।

प्राणी-पक्षीगिरि भावनेगिरि जरुरीदिल, ऐंदू यारू हैंलु साध्येल, कैलप्योमै अप्प नेमगिंठ मिगिला भावनातुक, सैंकेहपर मुत्तु सह्यदयागि वत्संसुत्तुवे, मुहादेवि वमारवर्वरु तु पुष्ट्यु अलु मुरिय मुलक प्राणी प्रपंचद मानव सक्षज जीवनशैलिय मामिक जित्रियवन्नु नीदिदावरे, जिंदु साफ्टी मानवनिंदागि प्राणी पक्षीगिरि प्रभैदगिरि अलैविनंजिनल, सिलुकिवे, जिंदु मुहादेवि वमारवर्वरु तु आठुजिरित्यैयु प्राणी-पक्षीगिरि रक्षक एवं मुत्तु अप्पागिरि केंद्र गमन हरिसुवली, जिंदु साफ्टीक प्रयोग नदेदिद ऐंदू हैंलु भयादु..

लेखिका का परिचय : महादेवी वर्मा

जन्म :- 24 मार्च 1907

स्थल :- फरुकाबाद में हुआ

उपाधी :- "आधुनिक मीरा"

शिक्षा :- प्रयाग विश्व विद्यालय से संस्कृत में एम ए उपाधि

रचनाएँ :- यामा, संध्या गीत, दीपशिखा, नीरजा, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, मेरा परिवार, शृंखला की कड़ियाँ।

पुरस्कार :- सेक्सरिया मंगल प्रसाद द्विवेदी पदक आदि अनेक पुरस्कार प्राप्त हैं। यामा कृति के लिए "ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मृत्यु :- सितंबर 1987



शब्दार्थ :-	गिलहरी - अलु	अचानक - जद्वृक्षुद्वृष्ट	घाव जब्म - गाय	हौले से - नीरानवागि
	चुन्नट - नीरंग	काँच - गाजु	गमला - झूमिन कुंठ	अवतीर्ण - अपडरिसु
	सोनजुही - ज्ञाजि मलींगेहाव	काकद्वय - एरडु कांग	चोंच - छुंठकु	मरहम - औषधि मुलामु.
	झब्बेदार - गुच्छ	डलिया - संज्ञ थुक्की	मनके - घंटी	गात - शरीर ठैक
	कीले - घोले	सुराही - झूजि	कौए - छाँगेलु	बरामदा - घुनेय मुंदिन भाग

I. एकवाक्य में उत्तर लिखिए

1. लेखिका ने कौए को क्यों विचित्र पक्षी कहा है ?

लैंगिकीयवरु काँगेयन्नु विचित्र पक्षी ऐंदू एवं एके कर्दिदावरे ?

उ : लेखिका ने कौए को इसलिए विचित्र पक्षी कहा है कि यह पक्षी एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित तथा अति अवमानित है।

लैंगिकीयवरु काँगेयन्नु विचित्र पक्षी ऐंदू एवं कर्दिदावरे एकेंदरे अदु एक्कालदली, गोरवपुलु, आगोरवपुलु, अति सन्नाहनिडपुलु मुत्तु अति अवमानवपुलु पक्षीयागिदे.

2. गिलहरी का बच्चा कहाँ पड़ा था ?

अळिलु मरि एलू बिद्दितु ?

उ : गिलहरी का बच्चा गमले और दीवार की संधि में पड़ा था।

अळिलु मरियु होपिन कुँज मठ्ठु गौँदेयु संधियलू अंचिकैँजूँ बिद्दितु.

3. लेखिका ने गिल्लू के घावों पर क्या लगाया ?

लैश्विक्यवरु गिलूपिन गायकै फैनन्सू हज्जिदरु ?

उ : लेखिका ने गिल्लू के घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया।

लैश्विक्यवरु गिलूपिन गायकै फैनन्सू हज्जिदरु.

4. वर्मा जी गिलहरी को किस नाम से बुलाती थीं ?

वम्मारवरु अळिलन्सू याव कैसरिनिंद करेयुत्तिदरु ?

उ : वर्मा जी गिलहरी को गिल्लू नाम से बुलाती थीं।

वम्मारवरु अळिलन्सू गिलू एंब हैसरिनिंद करेयुत्तिदरु.

5. गिलहरी का लघु गात किसके भीतर बंद रहता था ?

अळिलन्सू दैक्षण्य यावदर छंगदे जरुत्तुतु ?

उ : गिलहरी का लघु गात लिफाफे के भीतर बंद रहता था।

अळिलन्सू दैक्षण्य लैकॉटियोछंगदे जरुत्तुतु.

6. गिलहरी का प्रिय खाद्य क्या था ?

अळिलन्सू आळार यावदु?

उ : गिलहरी का प्रिय खाद्य काजू था।

अळिलन्सू आळार गौँदेंबि.

7. लेखिका को किस कारण से अस्पताल में रहना पड़ा ?

लैश्विक्यवरु याव कारणदिनागी आस्पत्तियलू जरबैकायितु ?

उ : लेखिका को मोटर दुर्घटना में आहत हो जाने के कारण से अस्पताल में रहना पड़ा।

मौँडारु अपळाडदलू गायगौँज कारण लैश्विक्यवरिंग आस्पत्तियलू जरबैकायितु.

8. गिलहरी गर्मी के दिनों में कहाँ लेट जाता था ?

बैंसिंग्यलू अळिलु एलू मुलगुत्तुतु ?

उ : गिलहरी गर्मी के दिनों में सुराही पर लेट जाता था।

अळिलु बैंसिंग्यलू निरन्तर क्षाणीय मैलै मुलगुत्तुतु .

9. गिलहरियों की जीवनावधि सामान्यतया कितनी होती है ?

अळिलुगळ जैवितावधि सामान्यवागी एष्टु वर्षगालु?

उ : गिलहरियों की जीवनावधि सामान्यतया दो वर्ष होती है।

अळिलुगळ सामान्यवागी एरडु वर्षगळ काल जैवितावधियन्सू कैँदिरुत्तुवै.

10. गिलहरी की समाधि कहाँ बनायी गयी है ?

अळिलन्सू समाधियन्सू एलू निमिसलायितु ?

उ : गिलहरी की समाधि सोनजुही की लता के नीचे बनायी गयी है।

अळिलन्सू समाधियन्सू जाजिमूलूगै बळियु अदियलू निमिसलायितु.

11. महादेवी वर्मा को किस नाम से पुकारा जाता है ?

महादेवी वम्मारवरन्सू याव हैसरिनिंद करेयुत्तुरै ?

उ : महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा नाम से पुकारा जाता है।

महादेवी वम्मारवरन्सू आधुनिक मीरा एंब हैसरिनिंद करेयुत्तुरै.

12. महादेवी वर्मा जी की किस कृति के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है ?

महादेवी वर्मा जी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है ?

उ : महादेवी वर्मा जी की "यामा" कृति के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है।

महादेवी वर्मा जी की "यामा" एवं हसरीन कृति ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है।

13. हमारे पुरखे किम रूप में आ सकते हैं ?

नमू शुभजरु याव रोपदली बरबहुदु ?

उ : हमारे पुरखे काक के रूप में सकते हैं।

नमू शुभजरु नमूद एनादरा षड्देदुकौजूलु कागिय रोपदली बरबहुदु.

14. गिल्लू, भूख लगने पर महादेवी वर्मा जी को कैसे सूचना देता ?

अळलु मूरि डनगै छसिवादागै हैंगै महादेवी वर्मा जी को सूचना देता ?

उ : गिल्लू, भूख लगने पर महादेवी वर्मा जी को चिक-चिक करके सूचना देता था।

अळलु डनगै छसिवादागै चिकौ चिकौ एवं धूळनी माडि महादेवी वर्मा जी को सूचना देता ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखना

प्रश्न 1. "गिल्लू" पाठ से आपको क्या सीख मिलती है ?

गिल्लू कै पाठदिंद निम्गै याव कलैकै खिलैदूदै ?

उ • गिल्लू पाठ से हमें यह सीख मिलती है कि-

- स्वेच्छा तथा प्राणी-दया की सीख।
- पशु-पक्षियों के स्वभाव और उनकी जीवन-शैली।
- भावानुकूलता, सहृदय व्यवहार की सीख।
- पशु-पक्षियों की रक्षा की सीख।
- उनके पति प्रेम-भाव जगाना।

- गिल्लू कै पाठद मुलक नावू कलियुव्वदैनैदरै
- सैक्षेह परतै मूत्तु प्राणीदयैयै पाठ।
- प्राणी-प्रस्त्रीगै सूफ्फाव मूत्तु अप्पौगै जैवनत्तैलै
- भावनात्तैकै मूत्तु सूक्ष्मदयैयै पाठ।
- प्राणी प्रस्त्रीगै रक्षेणैयै पाठ।
- अप्पौगैलौदैगै सैक्षेभावगैलू जागृत्तैलैसुव्वदु।

प्रश्न 2. लेखिका को गिलहरी किस स्थिति में दिखायी पड़ी ?

लैश्विकैयैवरु याव सैक्षियैलू अळलन्नू नैवैदिदरु ?

उ • लेखिका ने बाहर आकर देखा।

- एक छोटा सा गिलहरी का बच्चा गमले और दीवारके संधि में पड़ा था।
- अब बच्चा निश्चेष्ट सा गमले से चिपका पड़ा था।
- संभवतः वह घोसले से गिरा पड़ा था।
- जिसे दो कौए अपना सुलभ आहार बनाना चाहते थे।

• लैश्विकैयैवरु हौरगै बंदु नैवैदुत्तैरै

- बंदु वृष्टि अळलु मूरियु हौकैंद मूत्तु गौरैयै संधियैलू बिद्वैतु
- आ मूरियु वृक्षूभवागि हौकैंदकै अंटिकैलौदैत्तु।
- बहुतः आदु गुदिसलिनैद बिद्वैरबहुदु।
- एरदु कागैजू आ मूरियन्नू डेन्नू सुलभ आहारवनांगि माडिकौजूलु हवेणैसुक्तिदैवै

प्रश्न 3. लेखिका ने गिल्लू की प्राण कैसे बचाया ?

लैंबिकियरु अलीन प्राणवन्नु होगे कापाडिरु?

- महादेवी वर्मा जी घायल गिलहरी के बच्चे को देखा।
- उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लायीं।
- रुई से रक्त पोंछा।
- उसके घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया।
- कुछ घंटे उपरांत उसके मुंह में एक बूंद पानी टपकाया गया।
- इस प्रकार गिल्लू के प्राण बचाये।

- वर्मार्फरवरु गायगोंद अलिलु मुरियन्नु नैजेडुत्तारे.
- आ मुरियन्नु मैललने ऐति तेन्नु कैजैकै तेंदरु.
- हैति यिंद रक्तवन्नु भरेसिदरु.
- अदर गायगळ मैले बैन्निलिना मुलामन्नु हजुङ्गत्तारे.
- सैलाप समयद नैंडर अदर बायिंग बैंदु हेनी नैरन्नु चिमुक्सि लायितु.
- क्षेरितियागी अवरु अलीन प्राणवन्नु कापाडिरु.

प्रश्न 4. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

लैंबिकियरु गमनवन्नु सैलैयलु गिलालु एनु मादुत्तित्तु?

- उ • लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू -
- लेखिका के पैर तक आकर सर्द से परदे पर चढ़ जाता।
- फिर उसी तेजी से उतरता है।
- उसका दौड़ने यह क्रम चलता रहता है।
- जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठती।

- लैंबिकियरु गमनवन्नु सैलैयलु गिलालु गिलालु
- अवरु कालीनवरेंगे बैंदु वैगवागी वरदेय मैले हत्तुत्तुदे.
- मुत्ते अदै वैगदल्लु जैयुत्तुदे.
- अदर छापद क्षेरमुवु हागे मुंदुवरियुत्तुदे.
- क्षेरितियिंद लैंबिकरु अदन्नु हिदियलु एद्देजुवरेंगे नदेयुत्तुत्तु.

प्रश्न 5. महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू कहाँ-कहाँ छिप जाता था ?

मुहादेवी वर्मारन्नु अच्छिरिगोलिसलु गिलालु एलैलीलु अदिकेलुत्तुत्तु?

- उ • महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू -
- कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता।
- कभी परदे के चुन्नट में छिप जाता।
- और कभी सोनजुही की पत्तियों में छिप जाता था।

- मुहादेवी वर्मारन्नु अच्छिरिगोलिसलु गिलालु
- कैलप्होमेंू होवु कुंडद होवुगळल्लु अदिकेलुत्तुत्तु,
- वरदेय हौंदे मरेयागुत्तुत्तु
- मुत्ते कैलप्होमेंू जाजे मलीलगेय एलैगळल्लु अदिकेलुत्तुत्तु

प्रश्न 6. गिल्लू ने लेखिका की गैरहाजरी में दिन कैसे बिताये ?

लैंबिकियरु अनुपस्थितियल्लु अलिलु दिनगळन्नु होगे कलैयितु ?

- उ महादेवी वर्माजी को मोटर दुर्घटना में आहत होकर अस्पताल में रहना पड़ा।
- गिल्लू लेखिका की गैरहाजरी में उदास रहता था।
- अपना प्रिय खाद्य काजू कम खाता था।
- लेखिका के कमरे का दरवाजा खुलते ही वह अपने झूले से उतरकर दौड़ कर आ जाता।
- फिर किसी दूसरे को देख कर उदास होकर वापस अपने घोंसले में जा बैठता था।

- मुहादेवी वर्मार रवरिंग अपफात संभविसिद्धरिंद अवरन्नु आस्पत्तुगे सैरिसलायितु .
- लैंबिकियरु अनुपस्थितियल्लु अलिलु दुःखिदल्लु काल कलैयितु.
- तेन्नु नैचिन आहारवाद गोजंडियन्नो सह कैदिमे तिन्नुत्तुत्तु.
- लैंबिकरु कैजैकैय बागिलु तेरेद कौडले अदु तेन्नु जैजैकालीयिंद जैदु छैदि बरुत्तुत्तु
- मुत्ते पुनः बैरे यारन्नो कंडु दुःखिद तेन्नु गोजिनल्लु होगी कुलैतुकैलुत्तुत्तु.

III. पाँच -छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1. गिल्लू के क्रिया-कलाप के बारे में लिखिए ?

अळुंग छायफ कलापगळ भग्गि भरेयी?

<ul style="list-style-type: none"> उ • लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उनके पैर तक आकर सर से पर्दे पर चढ़ जाता है। • उसी तेजी से उत्तरता था। • कभी परदे की चुन्नट में गायब होता।, • दिन भर बाहरी गिलहरियों के साथ उछलता-कूदता। • ठिक चार बजे घर आकर अपने झूले में झूलने लगता था। • लेखिका की थाली के पास बैठकर बड़ी सफाई से खाना खाता। • लेखिका लिखने बैठती तब लिफाफे के भीतर रहकर उनका कार्य-कलाप देखा करता था। • और कभी लेखिका को चौंकाने के लिए फूलदान के फूलों में छिप जाता। 	<ul style="list-style-type: none"> • लैंबिकैयर गमनवन् लैंबियलु गिलाल अवर कालेनवर्गी बंदु वैग्वागी परदेय घैलै झैलैत्तु • अदै वैग्वर्गल् लैंबियुत्तु • कैलपौमै घरदेय घैंदे घरदेयागुत्तु • दिनविदै हौरांगण अलुगलैलोंदीगे आउवाढुत्तु • संजै सरियागी नालु गौंडीगे घुन्गे बंदु सैरुत्तु • लैंबिकैयर त्रैचै बैलूकौलु सैपेक्खैयिंद अन्धवन् लैन्धुत्तु • लैंबिकैयर बरवैंगी घुड़वाग अदु बंदु लादने कवर्लीये जदु अवर कायफ कलापगळन् नौरुत्तु • कैलपौमै लैंबिकैयर अचूरिगोलैसलु अदु घोषु कुंदद होवुगळल् अजीकैलैन्धुत्तु
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 2. लेखिका ने गिलहरी को क्या-क्या सिखाया ?

लैंबिकैयर अळुंग एन्हेनु कलीसिदरु?

<ul style="list-style-type: none"> • लेखिका ने गिल्लू को ठीक तरह खाना खाना सिखाया। • थाली के पास बैठकर खाना सिखाया। • थाली में से एक एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाना सिखाया। • लिफाफे में बंद रहना सिखाया। • मौन रहकर उनका कार्यकाल कलाप देखना सिखाया। • इस प्रकार गिल्लू को अपने प्रति सही व्यवहार करना सिखाया। 	<ul style="list-style-type: none"> • अवरु सरियाद रीतियल् अन्धवन् तिन् वुदन् कलीसिदरु। • त्रैचैय बैलूकौलु घुड़वाग अवरु वुदन् कलीसिदरु। • त्रैचैयिंद बंदेहोंदु अन्धुद अगळन् एत्तुकैंदु बहळ सैपेक्खैयिंद तिन् लु कलीसिदरु। • लक्हेतियल् लैरु वुदन् कलीसिदरु। • मोनवागी अवर कायफ कलापन् एत्तिसुवुदन् कलीसिदरु • कै रीतियागी अळुंग डेन्हुंदीगे सरियागिवत्तिसुवांडे कलीसिदरु।
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 3. गिल्लू के अंतिम दिनों का वर्णन कीजिए।

अळुंग कैनेय दिनगळन् वैसिसिर ?

<ul style="list-style-type: none"> उ : गिलहरियों की जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती। • अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। • दिन भर उसने न कुछ खाया, न बाहर गया। • गिल्लू के पंजे ठंडे हो रहे थे। • लेखिका ने हीटर जलाया। • उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। • परंतु प्रभात की प्रथम किरण के साथ ही वह चिर निद्रा में सो गया। 	<ul style="list-style-type: none"> • अळुंग जैवनावधि एरदु वर्वागळिंड हैच्हुगे लैरुवुदिल् • हागेये गिलालविन जैवन यात्रैय अ०त्यु श्वेतिंडु। • अदु दिनवैल् एनौ तिन् लिल् वागौ हौरगे हौरलौ लैल्. • अदर पंजुगळु तेणौ घुड़वागुत्तुदवु. • लैंबिकैयर एदू घैंडरो वैसिसिरु • अदके लैवूते नैदलु वैयुत्तिसिसिरु. • अदरे मुंझानेय वैयुव सौयरुकिरलगळींदीगे अदु जैरनिदेयल् मलगितु.
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 4. गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी की ममता का वर्णन कीजिए ?

अळौलीनौंदगैं मुहादैैव वमारवर वात्सल्यवन्नू वैसीसीरि ?

- | | |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> • महादेवी वर्मा जी ने घायल गिलहरी गिलहरी के बच्चे को देखा । • हौले से उठाकर कमरे में लाया । • घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया । • उसके का प्राण बचाया । • रहने के लिए झूला लगाया । • उसे गिल्लू नाम के साथ सम्मानित किया । • गिल्लू को खाने के लिए काजू तथा बिस्कुट दिया । • थाली में से एक-एक चावल उठाकर खाने को सिखाया। • गिल्लू के अंतिम दिनों में उसे बचाने की पूरी कोशीश भी की। • उसकी मृत्यु के बाद समाधि भी बनाया। • इस प्रकार महादेवी वर्माजी ने गिल्लू के प्रति अपनी ममता को दर्शाया है । | <ul style="list-style-type: none"> • लैंबीकियरु गायगौंड आळु मरियन्नू नौंदिदरु. • आ मरियन्नू मैलूनै एत्तै कौण्हैगै तंदरु • अदर गायगै मैलै पैसीलैनौ मुलामन्नू हैचिदरु. • अदर वासैकै जौैकालैयन्नू कैचूत्तूरै. • अदरकै गिलू, इंदू नामकरण म्यादुत्तूरै. • अळौलै तिन्नूलू बिस्टैटौ मूत्तू गौंडैबि नैदूत्तूरै. • तेप्पैयीैंद अन्नैद अगलन्नू एत्तै तिन्नूवैदन्नू कैलैसैत्तूरै. • अळौलै अैंतिमै दिनदल्लू अदन्नू बदुकैसलू साहन म्यादुत्तूरै. • अदु सत्तू नैंतर अदर सम्याधियू सक म्यादुत्तूरै. • उँ रैंतियागी मुहादैैव वमारवरु अळौलैनौंदगै तन्नू वात्सल्यवन्नू वैकैपैदियालै. |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

प्रश्न 5. गिल्लू ने महादेवी वर्मा की अस्वस्थाता में उनका ख्याल कैसे रखा ?

मुहादैैव वमारवरु अस्फैरादाग गिलू, अवरन्नू हैंगै नौंदिकैैंदितु ?

- | | |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> उ • वर्मा जी के प्रति गिल्लू अपनी सहानुभूति प्रकट करता है । • लेखिका की अस्वस्थाता में तकिए के सिरहाने बैठ जाता था । • अपने नन्हे पंजों से उनके सिर और बाल सहलाता रहता था । • इस प्रकार उनका ख्याल रखा । | <ul style="list-style-type: none"> • वमारवरैैंदगै गिलू, सँहानुभूतियन्नू वैकैपैसैत्तूरै. • अवरु अस्फैरादाग अदु अवर तेलै हैत्तैर कैलैत्तु कौलैैत्तैत्तूरै. • तन्नू चिकै चिकै पैंजुगैैंद अवर तेलै मूत्तू कौदलुगैैन्नू सावकाश्वागी नैैवरिसैत्तैत्तूरै. • उँ रैंतियागी गिलू, अवरन्नू चैनागी नौंदिकैैलैैत्तैत्तूरै. |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

IV . रिक्त स्थान भरिए

1. यह काक भुशुण्ड भी विचित्र पक्षी है।
2. उसी बीच मुझे मोटर-दूर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा।
3. गिल्लू के जीवन का प्रथम वसंत आया।
4. मेरे पास बहुत पश-पक्षी हैं।
5. गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया

V. अनुरूपता

- | | |
|-------------------------------------------------------------|-----------------------------------|
| 1. कश्मीरी सेब : कहानी :: गिल्लु : | उत्तर :- रेखाचित्र |
| 2. तुलसी के दोहे : तुलसीदास :: गिल्लु : | उत्तर :- महादेवी वर्मा |
| 3. अब्दूल कलाम : जनवादी राष्ट्रपति :: महादेवी वर्मा : | उत्तर :- आधुनिक मीरा |
| 4. अब्दूल कलाम : भारत रत्न :: महादेवी वर्मा : | उत्तर :- ज्ञानपीठ पुरस्कार |
| 5. १९०७ : महादेवी वर्मा जी का जन्म :: १९८७ : | उत्तर :- महादेवी वर्मा जी का निधन |
| 6. गिल्लू की पूँछ : झब्बेदार :: गिल्लू की आंखे : | उत्तर :- चमकीली |
| 7. कोयल : मधुर स्वर :: कौआ : | उत्तर :- कर्कश स्वर |

8. विल्ली : मियाऊं-मियाऊं :: गिल्लू :!	उत्तर :-चिक चिक
9. अभीनव मनुष्य : आधुनिक मनुष्य का वर्णन :: गिल्लू :।	उत्तर :- स्वेह भाव तथा प्राणी दया की सीख
10. गुलाब : पौधा :: सोनजुही :।	उत्तर :- लता

VI -कब्जड में अनुवाद कीजिए

1. कई घेटे के उपचार के उपरांत मुँह में एक बूंद पानी टपकाया।

କଲାପାର୍ଗ ଗଂଧିଗଳ ଆର୍ଦ୍ରକୈମ୍ଯ ନଂଭର ଭାବୀ ବଂଦୁ ହେଲି ନିରନ୍ତର କାଳାଯାଇଥିଲା.

2. बड़ी कठिनाई से मैंने उसे शाली के पास बैठना सिखाया।

ବହଳ କଷେପତତ୍ତ୍ଵ ନାମୁ ଆଦନ୍ତ ତତ୍ତ୍ଵ ବଳୀ କୋରୁପୁରୁଷଙ୍କ କଲୀଶିଦେ.

3. इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

ଜୀମ୍ବାଦୁ ଚିକା ଜୀଏଯିନ୍ଦ୍ର ମୁନେଯିଲା କାକିଦ ନାଯୀ-ବୈକୁଞ୍ଜିଦ କାପାଡ଼ପୁରୁଷ ବଂଦୁ ସମୁନ୍ଦ୍ର ଆଗୁଠିଲା...

4. दिन भर गिल्लू ने न कुछ खाया, न बाहर गया।

ଦିନବିଦୀ ଗିଲାଲ ଫନ୍ଦ ତିନ୍ଦିଲା, କାଗୁ ହୋରଗେଯା ହୋଇଲାଲା.

5. गिल्लू मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता था।

ଗିଲାଲ ନନ୍ଦ ବଳୀ ଜିଛିଦ ନିରିନ ହୋଜି ମେଲେ ମଲଗି ବିଢ଼ୁତୀତିଲା.

VII. अन्य वचन शब्द लिखिए :

1. उँगली - उँगलियाँ

2. आँख - आँखें

3. पूँछ - पूँछें

4. खिड़की - खिड़कियाँ

5. फूल - फूल

6. पंजा - पंजे

7. लिफाफा - लिफाफे

8. कौआ - कौए

9. गमला - गमले

10. घोंसला - घोंसले

VIII. प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए :

1. चिपकना चिपकाना चिपकवाना

2. लिखना लिखाना लिखवाना

3. मिलना मिलाना मिलवाना

4. देखना

दिखाना

दिखवाना

5. छेड़ना

छिड़ना

छिड़वाना

6. भेजना

भिजाना

भिजवाना

7. सोना

सुलाना

सुलवाना

8. रोना

रुलाना

रुलवाना

9. धोना

धुलाना

धुलवाना

10. पीना

पिलाना

पिलवाना

11. सीना

सिलाना

सिलवाना

IX . विलोमार्थक शब्द लिखिए :

निकट x दूर .

1. दिन x रात

2. भीतर x बाहर

3. चढ़ना x उतरना

विश्वास X अविश्वास।

1 . प्रिय x अप्रिय

2 . संतोष x असंतोष

3 . स्वस्थता x अस्वस्थता

उत्तीर्ण x अनुत्तीर्ण

1. उपयोगी x अनुपयोगी

2. उपस्थिति x अनुपस्थिति

3. उचित x अनुचित

ईमान x बेईमान

1. होश x बेहोश।

2. खबर x बेखबर

3. रोज़गार x बेरोज़गार

X. समानार्थक शब्दों को लिखिए :

1. उपचार - चिकित्सा - इलाज

2. गात - शरिर - देह

3. आहार - खाना - भोजन

4. विस्मय - अचरज - आश्र्वय

5. हिम्मत - साहस - धैर्य

6. खोज - तलाश - ढूँढ

ಕನ್ನಡ ಸಾರಾಂಶ : - ಗಿಲೂಲ್ {ಅಳಿಲು ಮರಿ}

‘ ಗಿಲೂಲ್ ’ ಪಾಠದ ಮೂಲಕ ಮಹಾದೇವಿ ವರ್ಮಾರವರು ಪ್ರಾಣಿ ಪ್ರಸ್ತಿಗಳು ಮಾನವನ ಜೊತೆಗೆ ಹೇಗೆ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಚೇಳಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದೇವೆ ಎಂಬುವದನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತಾ ತನ್ನ ಜೀವನದ ಸ್ಪಂತ ಅನುಭವವನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಂಡಿದಾಗಿರೆ.

ಒಂದು ದಿನ ಲೇಖಿಯವರು ತನ್ನ ಕೋಣೆಯಿಂದ ಹೊರಗೆ ಒಂದು ನೋಡುತ್ತಾರೆ ಒಂದು ಪ್ರಟ್ಟ ಅಳಿಲು ಮರಿಯ ಹಾಕುಂಡ ಮತ್ತು ಗೋಡೆಯ ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿರು. ಆ ಮರಿಯ ಪ್ರಸ್ತುತಿವಾಗಿ ಹಾಕುಂಡಕ್ಕೆ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿತ್ತು. ಬಹುಶ: ಅದು ಗುಡಿಸಲಿನಿಂದ ಬಿದ್ದಿರಬಹುದು. ಎರಡು ಕಾಗೆಗಳು ಆ ಮರಿಯನ್ನು ತನ್ನ ಸುಲಭ ಆಹಾರವನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಹಣಣಿಸುತ್ತಿದ್ದವು. ಕಾಗೆಗಳು ತನ್ನ ಕೊಕ್ಕನಿಂದ ಕುಕ್ಕಿ ಗಾಯ ಮಾಡಿದವು. ಅಳಿಲು ಮರಿ ಹೆಚ್ಚು ಸಮಯ ಬದುಕುಪುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಜನರು ಭಾವಿಸಿದ್ದರು. ಅದರೆ ಮಹಾದೇವಿ ವರ್ಮಾರವರು ಇದಕ್ಕೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನೀಡಿ ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಉಳಿಸಿದರು. ಮಾರನೇ ದಿನ ಅಳಿಲು ಮರಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಗುಣವಾಯಿತು. ಅಳಿಲು ಮರಿಯ ಕಣ್ಣಗಳು ನೀಲಿ ಮತ್ತು ಹೊಳಪಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಿತ್ತು. ಮಹಾದೇವಿ ವರ್ಮಾರವರು ‘ ಗಿಲೂಲ್ ’ ಎಂದು ಹೇಸರು ಇಟ್ಟರು. ಮಹಾದೇವಿ ವರ್ಮಾರವರು ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ಬುಟ್ಟಿ ಕಿಟಕಿಗೆ ನೇತು ಹಾಕುತ್ತಿದ್ದರು. ಗಿಲೂಲ್ ಇದೇ ಚಿಕ್ಕ ಬುಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು ಎರಡು ವರ್ಷ ವಾಸವಾಗಿತ್ತು. ಜನರು ಗಿಲೂಲ್‌ನಿನ ಚೆಟುವಟಿಕೆ ಮತ್ತು ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆಯನ್ನು ನೋಡಿ ಆಶ್ಚರ್ಯ ಪಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಗಿಲೂಲ್ ಲೇಖಿಯವರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸುತ್ತಾಡುತ್ತಿತ್ತು. ಗಿಲೂಲ್‌ನಿಗೆ ಲೇಖಿ ಹೊರಗೆ ಹೋಗಿ ಬರಲು ಸಾಫ್ತೆಂತ್ರ್ಯ ನೀಡಿದರು. ಗಿಲೂಲ್ ಹೊರಗೆ ಇರುವ ಅಳಿಲುಗಳ ಜೊತೆ ಅನಂದದಿಂದ ಆಟವಾಡುತ್ತಿತ್ತು. ಗಿಲೂಲ್ ಬೇಗನೆ ಇತರೇ ಅಳಿಲುಗಳ ಜೊತೆ ಮುಖಿಂಡನಾಗಿತ್ತು. ಗಿಲೂಲ್‌ನಿನ ನೆಚ್ಚಿನ ಆಹಾರ ಗೋಡಂಬಿಯಾಗಿತ್ತು .

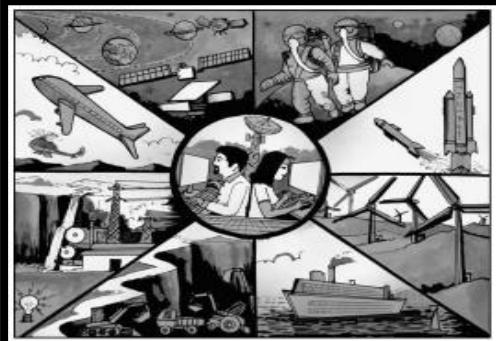
ಲೇಖಿಯವರ ಗಮನವನ್ನು ಸೇಳಿಯಲು ಗಿಲೂಲ್ ಅವರ ಕಾಲಿನವರೆಗೆ ಒಂದು ವೇಗವಾಗಿ ಪರದೆಯ ಮೇಲೆ ಹತ್ತುತ್ತದೆ ಮತ್ತೆ ಅದೇ ವೇಗದಲ್ಲಿ ಇಳಿಯತ್ತದೆ. ಅದರ ಓಡಾಡ ಈ ಕ್ರಮವು ಲೇಖಿಕರು ಅದನ್ನು ಹಿಡಿಯಲು ಎದ್ದೇಳುವರೆಗೆ ನಡೆಯುತ್ತಿತ್ತು. ಕೆಲವೊಮ್ಮೆ ಮಹಾದೇವಿ ವರ್ಮಾರನ್ನು ಅಚ್ಚರಿಗೊಳಿಸಲು ಗಿಲೂಲ್ ಹಾವು ಕುಂಡದ ಹೊವುಗಳಲ್ಲಿ ಅಡಗಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿತ್ತು. ಪರದೆಯ ಹಿಂದೆ ಮರೆಯಾಗುತ್ತಿತ್ತು ಮತ್ತೆ ಕೆಲವೊಮ್ಮೆ ಜಾಜಿ ಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಎಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಅಡಗಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿತ್ತು.

ಲೇಖಿಯವರು ಗಿಲೂಲ್ ವಿಗೆ ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವನ್ನು ತಿನ್ನುವುದನ್ನು ಕಲಿಸಿದರು. ತಟ್ಟೆಯ ಬಳಿ ಕೂತು ಉಟ ಮಾಡುವುದನ್ನು ಕಲಿಸಿದರು. ತಟ್ಟೆಯಿಂದ ಒಂದೊಂದು ಅನ್ನದ ಅಗಳನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಬಹಳ ಸ್ಪಷ್ಟತೆಯಿಂದ ತಿನ್ನಲು ಕಲಿಸಿದರು. ಲಕೋಟೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದ ವೌನವಾಗಿ ಅವರ ಕಾಯ್ ಕಲಾಪನ್ನು ವೀಕ್ಷಿಸುವುದನ್ನು ಕಲಿಸಿದರು. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಲೇಖಿಕರು ಅಳಿಲಿಗೆ ತನ್ನೊಂದಿಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಪಾಠ ಕಲಿಸಿದರು. ಬೇಸಿಗೆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗಿಲೂಲ್ ತಂಪಾದ ಹೊಜಿಯ ಮೇಲೆಮಲಗುತ್ತಿತ್ತು.

ಒಂದು ದಿನ ಮೋಟಾರು ಅಪಘಾತದಲ್ಲಿ ಗಾಯಗೊಂಡ ಕಾರಣ ಲೇಖಿಯವರಿಗೆ ಆಸ್ಪತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಇರಬೇಕಾಯಿತು. ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಲೇಖಿಯವರು ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರಿಂದ ಗಿಲೂಲ್ ವಿಗೆ ಬಹಳ ಬೇಸರ ಉಂಟಾಗಿತ್ತು. ತನ್ನ ನೆಚ್ಚಿನ ಆಹಾರವಾದ ಗೋಡಂಬಿಯನ್ನೂ ಸಹ ಕಡಿಮೆ ತಿನ್ನುತ್ತಿತ್ತು. ಲೇಖಿಯವರ ಕೋಣೆಯ ಬಾಗಿಲು ತೆರೆದ ಕೂಡಲೇ ಅದು ತನ್ನ ಜೊಕಾಲಿಯಿಂದ ಇಳಿದು ಓಡಿ ಬರುತ್ತಿತ್ತು ಮತ್ತೆ ಪ್ರನೇಃ ಬೇರೆ ಯಾರನ್ನೂ ಕಂಡು ದುಃಖಿಂದ ತನ್ನ ಗೂಡಿನಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿತ್ತು.

ಅಳಿಲುಗಳ ಜೀವನಾವಧಿ ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಿಗಂತ ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಹಾಗೆಯೇ ಗಿಲೂಲ್ ವಿನ ಜೀವನ ಯಾತ್ರೆಯ ಅಂತ್ಯ ಒಂದೆಬಿಟ್ಟು. ಅದು ದಿನವೆಲ್ಲ ಏನೂ ತಿನ್ನಲ್ಲಿಲ್ಲ ಹಾಗೂ ಹೊರಗೆ ಹೋಗಲೂ ಇಲ್ಲ.. ಅದರ ಪಂಚಗಳು ತಣ್ಣಾಗಾಗುತ್ತಿದ್ದವು. ಲೇಖಿಯವರು ಎದ್ದು ಹೀಟರ್ ಹಚ್ಚಿದರು. ಅದಕ್ಕೆ ಉಷ್ಣತೆ ನೀಡಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದರು. ಅದರೆ ಮುಂಜಾನೆಯ ಪ್ರಥಮ ಸೂರ್ಯಕಿರಣಗಳಿಂದಿಗೆ ಅದು ಚಿರಸಿದ್ದೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗಿತು. ಅದರ ಸಮಾಧಿಯನ್ನು ಜಾಜಿ ಮಲ್ಲಿಗೆ ಬಳಿಯ ಕೆಳಗಡೆ ನಿರ್ಮಿಸಲಾಯಿತು.

4. कविता - अभिनव मनुष्य {उद्घासीक मनुष्य}



कविता का आशय :- इस पद्धति में वैज्ञानिक युग और आधुनिक मानव का विश्वेषण हुआ है। कवि दिनकर जी इस कविता द्वारा यह संदेश देना चाहते हैं कि आज के मानव ने प्रकृति के हर तत्व पर विजय प्राप्त कर ली है। परंतु कैसी विडंबना है कि उसने स्वयं को नहीं पहचाना, अपने भाईचारे को नहीं समझा। प्रकृति पर विजय प्राप्त करना मनुष्य की साधना है, मानव-मानव के बीच स्नेह का बाँध बाँधना मानव की सिद्धि है। जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़कर आपस की दूरी को मिटाए वही मानव कहलाने का अधिकारी होगा।

अ पद्ध भागदलि वैज्ञानिक युग मनुष्य उद्घासीक मनुष्यन कुरितु
विश्वेषणमादलागिदे। दिनकर रघुरु अ पद्ध भागद मुलक नीछिद संदेशपेंदरे जन्दन मानवनु प्रकृतियलि एलिंदे
(एलाल, अंठगल मैले) विजयवनु साधिसिद्धाने अदरे विजयवेनेंदरे जन्दनु भन्ननु भानु गुरुत्तिसिलि. तेलु
सक्कोदरत्तवनु अर्थमादिकैलोदिलि. प्रकृतियनु जयसुव्युद्य मनुष्यन साधनेयागिदे. जरुर मनुष्यरोदिगे सैकद
उल्लक्षित्तनु केल्पुव्युद्य मनुष्यन सिद्ध यागिदे। याव मनुष्यनु जरुररेलोदिगे प्रैमद संबंध कैलेदु परस्पर देवेष्वनु
मरेयुभान्ने आवने निजवाद मनुष्यनेसिकैलु लुक्कनु प्रदेदिरुभाने।

कवि परिचय :- रामधारी सिंह दिनकर

जन्म :- सन 1908

जन्म स्थल :- बिहार प्रान्त के मुंगेर जिले में हुआ।

पत्री :- श्यामवती दिनकर

बच्चे :- मनरूप देवी, बाबू रवि सिंह

मृत्यु :- 24 अप्रैल 1974

प्रमुख रचनाएँ :- कुरुक्षेत्र, उर्वशी, प्रणभंग, रेणुका, रश्मिरथी, हुंकार, रसवंती सामधेनी,

इतिहास के आँसू, धूप और धूआँ, दिल्ली, बापू, धूप-छाँह।

ज्ञानपीठ पुरस्कार :- सन् 1972 में “उर्वशी” रचना के लिए मिला।

पुरस्कार :- पद्म भूषण (1959), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1959), साहित्य-चूड़ामणि (1968), ज्ञानपीठ (उर्वशी काव्य)

प्रस्तुतांश :- अभिनव मनुष्य “पद्म भाग “कुरुक्षेत्र” के षट्-सर्ग से लिया गया है।



शब्दार्थ :-	अभिनव - उद्घासीक	आज की - जन्दन	दुनिया - जगत्तु	हुक्म - अप्रकृति
	व्यवधान - उद्घासी	सरित - नदि	सिंधु - समुद्र	आलोक - चौलाल
	ज्ञेय - माहीति	श्रेय - शुभ मुंगल	बांध - उल्लक्षित्त	विडंबना - नाशिकेय मातु
	काँपते हैं - नद्दागुड्हवे	कर - कै	पवन - गाढ़ी	जल - नीर
	नवीन - ऊपर	आपस - परस्पर	वारि - नीरु	भाप - आवि

I. एकवाक्य में उत्तर लिखिए

1. आज की दुनिया कैसी है ?

ज०दिन जगत् त्रु हैंदि ?

उ : आज की दुनिया विचित्र और नवीन है।

ज०दिन जगत् त्रु विचित्र घट् त्रु हैंदि ?

2. मानव के हुक्म पर क्या चढ़ता और उत्तरता है ?

मानवन अङ्गेयं०ठै यावृद्धरल्॒ एरिष्ठै कौंडुभरुठै ?

उ : मानव के हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता और उत्तरता है।

मानवन अङ्गेयं०ठै गाँय॑ तापमानदल्॒ एरिष्ठै कौंडुभरुठै ?

3. परमाणु किसे देखकर काँपते हैं ?

परमाणुगल्॒ एनन्॒ नौ॒दि नदुगुठै ?

उ : परमाणु आधुनिक पुरुष के करों को देखकर काँपते हैं।

परमाणुगल्॒ आधुनिक मनुष्टनै दैग्धन्॒ नौ॒दि नदुगुठै ?

4. 'अभिनव मनुष्य' कविता के कवि का क्या नाम है ?

आधुनिक मनुष्टै कै कैतैयै कैयै हैैनु ?

उ : 'अभिनव मनुष्य' कविता के कवि का नाम रामधारी सिंह दिनकर है।

आधुनिक मनुष्टै कै कैतैयै कैयै हैैरु रामधारीै०कै दिनकरै.

5. दिनकर जी के अनुसार आधुनिक मानव ने किस पर विजय पायी है ?

दिनकररवर आनुसार आधुनिक मनुष्टै०यै यावृद्धर मै॒लै॒ विजयै साधिसिद्धानै ?

उ : दिनकर जी के अनुसार आधुनिक मानव ने प्रकृति के हर तत्व पर विजय पायी है।

दिनकररवर आनुसार आधुनिक मनुष्टै०यै यावृद्धर मै॒लै॒ विजयै०वन्॒ साधिसिद्धानै.

6. नर किन-किन को एक समान लाँघ सकता है ?

मनुष्टनै यावृद्धन्॒ च०दै॒ समानै दाटुबल॒नै ?

उ : नर नदी, पहाड़ तथा समुद्र को एक समान लाँघ सकता है।

मनुष्टनै नदिै, पहाड़ै, समुद्रै गलन्॒ च०दै॒ समानै दाटुबल॒नै.

7. आज मनुज का यान कहाँ जा रहा है ?

ज०दु मनुष्टनै यानै० एलै॒ गै॒ हैै० गै॒ त्रुै॒ ?

उ : आज मनुज का यान गगन में जा रहा है।

ज०दु मनुष्टनै यानै० गै॒ गै॒ हैै० गै॒ त्रुै॒ ?

8. 'अभिनव मनुष्य' कविता को किस सर्ग से लिया गया है ?

आधुनिक मनुष्टै कै पद्धवन्॒ यावै॒ सर्गै॒ दिं॒ आयुै॒ कै॒ लागिै॒ ?

उ : 'अभिनव मनुष्य' कविता को कुरुक्षेत्र के षष्ठ सर्ग से लिया गया है।

आधुनिक मनुष्टै कै पद्धवन्॒ कुरुक्षेत्रै॒ आरनै॒ सर्गै॒ दिं॒ आयुै॒ कै॒ लागिै॒ ?

9. पवन का ताप किसके हुक्म पर चढ़ता और उतरता है ?

गाँधी भाष्मानपुर यार आज्ञायोंठे एरिलिंगागुड़दें ?

उ : मानव के हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता और उतरता है।

मानवन आज्ञायोंठे गाँधी भाष्मानदली, एरिलिंग वागुड़दें .

II. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखना :

प्रश्न 1 . 'प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन' इस पंक्ति का आशय समझाइए ?

पुक्कृतीयोंलैंदे घुरुणनु विजयागी आसीननागिदाहाने चं वाक्यद आशयवैनु ?

उ • आज मनुष्य प्रकृति के हर तत्व पर विजय पाई है	• ७०दु मानवनु पुक्कृतीय एलैंदे विजयवन्नु साधिसिदाहाने.
• आज मानवके हाथों में जल, विद्युत और भाप बँधेहुए हैं।	• ७०दु मानवन कैयली, नीरु विद्युता उप्पुते बंधितवागिदें.
• मानव के हुक्म पर पवन का तापचढ़ता-उतरता है।	• मानवन आज्ञायोंठे गाँधी भाष्मानदली, एरिलिंग वागुड़दें.
• मानव एक समान नदी, पर्वत और सागर लाँघ रहा है।	• मानवनु छोदी समानवागी नदि-समुद्र वर्षतगलन्नु ताटबल्लनु
• आज मानव का यान गगन में जा रहा है।	• ७०दु मानवन यानपु गगनकैरुत्तिदें.

प्रश्न 2 . दिनकर जी के अनुसार 'मानव का सही परिचय ' क्या है ?

कै दिनकररपर पुकार मनुष्णनु निजवाद परिचयवैनु ?

• उ - मानव-मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़ना।	• मनुष्ण मनुष्ण रौंदिगे प्रैमुद संबंध हैंकैयुपुदु.
• आपसी भेदभाव को दूर करना।	• परस्पर देष्टेवन्नु द्वारमादुपुदु.
• मानव मानव के बीच स्नेह का बांध बांधना	• मनुष्णर नदुवै सैरेहद अलैकटपुन्नु केट्टुपुदु.
• स्वयं को पहचानना।	• तन्ननें भानु तिलियुपुदु.
• अपने भाईचारे को समझना।	• तन्न सहेदरत्तेवन्नु तिलियुपुदु.
• बुधि पर हृदय की जीत करना।	• बुधि शक्तिय मैले हृदयद गेलुपु साधिसुपुदु.
• यही मानव के सद्वी साधना है।	• जद्वै मनुष्णनु निजवाद साधनेयादें.

प्रश्न 3 . इस कविता का दूसरा शीर्षक क्या हो सकता है ?

चं पद्मकै याव शीर्षकैयन्नु नीडेबहुदु ?

• इस कविता का दूसरा शीर्षक 'नवीन युग' हो सकता है।	• चं पद्मकै "हैसयुग" "एब शीर्षकै नीडेबहुदु.
• क्योंकि, आज मानव ने प्रकृति के हर तत्व पर विजय पायी है,	• याकैंदरे ७०दु मानव पुक्कृतीय एलाल अंशगल मैले विजयवन्नु साधिसिदाहाने.
• लेकिन मानव के संबंध को भुला बैठा है।	• आदरे मानवर परस्पर संबंधवन्नु मरेतिदाहाने.
• आज मानव सब कुछ कर सकता है समझ सकता है।	• ७०दु मनुष्ण एललवन्नुमाद बहुदु मत्तु तिलियुबहुदु.
• लेकिन मानव- मानव के बीच आपस के प्रेम को नहीं समझा।	• आदरे मनुष्ण मनुष्णरौंदिगन प्रैमुद संबंधवन्नु तिलिदल....

प्रश्न 4. आधुनिक मानव की भौतिक साधना का वर्णन कीजिए ?

आधुनिक मनुष्यन् भौतिक साधनेयन् विवरिसि?

- आज के मानव ने प्रकृति को अपने नियंत्रण में रखा है।
 - उसने प्रकृति के हर तत्व पर विजय पाई है।
 - आज मनुष्य के हाथों को देखकर परमाणु कांपते हैं।
 - उसके हाथों में जल, विद्युत और भाप बैंधे हुए हैं।
 - मानव के हुक्म पर पवन का तापचढ़ता-उत्तरता है।
 - मानव एक समान नदी, पर्वत और सागर लाँघ रहा है।
 - आज उसका यान गगन में जा रहा है।
 - यहीं उसकी भौतिक साधना है।
- ७०दिन मनुष्यन् पृकृतियन् तेन् नियंत्रणदलीला जटिलादने
 - अबन् पृकृतियलीला एलादे विजयवन् साधिसदादने
 - अबन कैगजन् न्मोदि परमाणुगजु नदुगुत्तवे
 - नीरु विद्युता अविगलल्हरा अबन कैयलीला ब०दिसलपृष्ठीवे.
 - मानवन् आज्ञेयीयं गालिय तापमानदलीला एरिलत वागुत्तदे
 - मानवन् समानवागि नदि-समुद्र पवर्तगजन् दाटबललन्.
 - ७०द्यु अबन यानवु गगनकैरुत्तिदे.
 - ०९वैलल्हरुगजु अबन भौतिक साधनेयागिवे.

III. भावार्थ लिखिए :-

यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,

ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।

ब्रोम से पाताल तक सब कुछ इसे है जेय,

पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय।

उत्तर -उपर्युक्त पंक्तियों को दिनकर जी लिखित अभिनव मनुष्य कविता से लिया गया है। कवि दिनकरजी यह कहना चाहते हैं कि, यह मानव सृष्टि को शृंगार किया है। ज्ञान का विज्ञान का प्रकाश का आगार है। आकाश से पाताल तक सब कुछ इसे ज्ञान है। पर, यह मनुज का परिचय नहीं है और यह न उसका श्रेय भी है।

क्षमैलिन नालागजन् दिनकररवरु बरेदिरुवंठक अभिनव मनुष्य पद्धदिंद आयुद्देश्यलागिदेक्ष्व हैंजुत्तारे ७०दिन मनुष्य सृष्टिय शृंगारद कृति यागिदादने। अबन् बैजकु एंब झान मत्तु विझानद निलय एनिसिकौंडिदादने। क्षमैनुष्यनु आकाशदिंद प्राभाजद वरिगिन एलाल विषयगजन् तिळिदादने। आदर्दे ७०दु निज मनुष्यन परिचयवलल मत्तु ७०दु अबन कैरेक्टियो संक अलल।

IV. उदाहरण के अनुसार तुकांत शब्दों को पहचानकर लिखिए :

उदा - नवीन - असीन

1. भाप - ताप
2. व्यवधान - सावधान
3. शृंगार - आगर
4. ज्ञेय - श्रेय
5. जीत - ग्रीत

V. पंक्तियों को पूर्ण कीजिए-

आज की दुनिया विचित्र नवीन।

प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।

करो में वारी, विद्युत, भाप,

हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।

VI. पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

1. दुनिया - जगत, संसार
2. विचित्र - अजीब, असामान्य
3. नवीन - नया, नव
4. नर - आदमी, पुरुष
5. वारि - जल, पानी
6. कर - हाथ, हस्त
7. आगार - घर, गृह

VII. विलोम शब्द लिखिए :-

आज	x	कल
आधुनिक	x	प्राचीन
पुरुष	x	स्त्री
नर	x	नारी
चढ़ना	x	उतारना
समान	x	असमान
ज्ञान	x	अज्ञान
सीमित	x	असीमित
जीत	x	हार
तोड़	x	जोड़

VIII. अनेक शब्द के लिए एक शब्द :-

- सभी जगहों में - सर्वत्र
- आसन पर बैठा हुआ - आसीन
- बचा हुआ - शेष
- मनु की संतान - मनुष्य
- विशेष ज्ञान - विज्ञान
- अधिक विद्या प्राप्त - विद्वान

VIII. अनुरूप शब्द लिखिए:-

1. मातृभूमि : भगवतीचरण वर्मा :: अभिनव मनुष्य : रामधारीसिंह दिनकर
2. गिरि : पहाड़ :: वारि : जल
3. पवन : वायु :: आलोक : प्रकाश
4. सिंधु : सागर : सरित : नदी
5. कर्नाटक संपदा : वैज्ञानिक आविष्कार का चित्रण :: अभिनव मनुष्य : आधुनिक मनुष्य का चित्रण
6. पवन : वायु :: सिंधु : सागर
7. जमीन : आसमान :: आकाश : पाताल
8. नर : आदमी :: उर : हृदय

कनूऽ नारांश :- 'अधुनीक मनुष्य'

अधुनीक मनुष्य का पद्धतिभागवन्नु दिनकररवरु बर्देदरुव कुरुक्षेत्रद आरनेय सर्वदिंद अयुद्धकौशलागिद. कवि हेळुत्तुरे ४०दिन जगत्तु बहल विचित्र मृत्तु नवीनवागिद. मनुष्यनु पृकृतिय एलाल अंतर्गत मैले तन्नु विजयवन्नु साधिसिद्धान्ने. नीरु, विद्युच्छृंखल, आवि, मुंठादपुगल मैले मनुष्य नियंत्रणवन्नु साधिसिद्धान्ने. अधुनीक मनुष्य गाळिय दिक्षन्नु सह बदलायिसलु समर्थनागिदान्ने. अधुनीक मनुष्याय नदिगलु, बिंधुगलु समुद्रवन्नु समान रोपदलील दाटिलु समर्थनागिदान्ने. आदै रीति पृकृतियन्नु तन्नु नियंत्रणदलील इट्टुकौशलवृद्धन्नु कलितिदान्ने.

४०दिन मनुष्यनु वैज्ञानिकवागि साक्षम्प बैलेदिदान्ने. अवनु तानु तेयारिसिद यानगलन्नु आकाशकै केलैहीसुत्तिदान्ने. परमाणगलु सह मनुष्यन कैगलन्नु नैोडि भयदिंद कंपिसुत्त्रवे. का मनुष्य सृष्टिय शैंगारद कृतियागिदान्ने आदै मनुष्य बैलेकु एंबुव झान हागा विज्ञानद सिलय एनिसिकौंदिदान्ने. का मनुष्यनिगे आकाशदिंद प्राताळदवरंगे जरुव एलाल विषयद माहिति तेलिदिदान्ने.

एलाल रंगदलूल मनुष्य साधनेयन्नु मादिदान्ने आदरे विषयासवैनेंदरे का मनुष्य, मानव मृत्तु व्यावहन नदुवे जरबेकाद सैक्षेहवन्नु अर्थमादिकौंदिलल. जदु मनुष्यनिगे श्रीयसूरवागि जरुवदिलल मनुष्य मनुष्य रौंदिगे प्रेमुद संबोध हेकैयुवृदु. परस्पर देवेषवन्नु द्योरमादुवृदु मनुष्यर नदुवे सैक्षेहद आकेट्टुन्नु केट्टुवृदु. तन्नुन्नै तानु तेलियुवृदु. तन्नु सहेदरत्फवन्नु तेलियुवृदु. बुद्धिशक्तिय मैले हृदयद गेलुव साधिसुवृदु. जदुवे मनुष्यन निजवाद साधनेयागिद. उभेलुमैलु मनुष्य तन्नु हृदयदलील बरुव उलेय विषयगलन्नु सह कैल तेक्षदु आगले अवन जैव यशस्वन्नु काणवृदु. ४०दु पृष्ठंचेदलील परस्पर सैक्षेह भावने हेचाष्टदरे मनुष्यकैलकै मुंगलकरवागुत्तदे. यारु परस्पर सैक्षेहदिंद बदुकुत्तुने अवने झाली, हागा बुद्धिवंतनेसिकौशलत्तुन. ४०तक मनुष्यरलील परस्पर देवेषभावने जरुवदिलल. वास्तव सैक्षियलील अवने निजवाद मनुष्यनेसिकौशलु तन्नु प्रदेदिदान्ने. का रीतियागि कवि दिनकररवरु अधुनीक मनुष्यन विलेषकै मादिदारे.

પાઠ 5 - મેરા બચપન { નેન્નુ ભાલ્ય }



પાઠ કા આશય :- ઇસ પાઠ કે દ્વારા છાત્ર સાદગી, ધાર્મિક સહિષ્ણુતા, મિલ જુલ કર રહના ઔર કિતાબેં પઢને કા પ્રયોજન આદિ કી પ્રેરણ પા સકતે હૈને

ચું પાઠદ મૂલક, વિદ્યાધ્રિગળું સરલીં, ધ્રામીફ સહિમુંઠે, બગિંટું મેઠું પુસ્તકગળનું ઓદ્યોગ હાંડેશ ચું એલાં હાંડુમ ગુણગણિંદ સૂફાફે પદેયુથુંદે.

લેખક કા પરિચય - ડા. એ.પી.જે અબ્દુલ કલામ

લેખક કા નામ :- અ઱લ ફકીર જૈનુલાબદીન અબ્દુલ કલામ

જન્મ :- 15 અક્ટૂબર 1931

જન્મ સ્થળ :- તમિલ નાડુ રાજ્ય કે રામેશ્વરમાં

શૈક્ષણિક યોગ્યતાએँ :- ઎મ્. ટેક ઔર પી.એચ.ડી।

રાષ્ટ્રપતિ :- અબ્દુલ કલામજી 25 - 7 - 2002 સે 24 - 7 - 2007 તક હમારે દેશ કે રાષ્ટ્રપતિ રહેંટાં

રચનાએँ :- અધ્રિ કી ઉડ્ઝાન, ઇગનાઇટેડ માઇંડ્સ, ઇંડિયા 2020

પુરસ્કાર :- ભારત રત્ન, પદ્મભૂષણ, પદ્મ વિભૂષણ આદિ।

પ્રસ્તુત પાઠ કો અબ્દુલ કલામ જી કા આત્મકથાઅધ્રિ કી ઉડ્ઝાન સે લિયા ગયા હૈ।

તિથન :- 27 જુલાઈ 2015



શબ્દાર્થ :-	કસ્બા - ચીકું હેઠુણા	જીવનસંગિની - છેંડતી	ખાનદાન - મુનેઠન	પુશ્તૈની - હ્રોવાનચીફ્ટ
	અંતરંગ મિત્ર - છુટ્ટુંઠું ગેંઠું	સાદગી - સરલીં	તટ - તીર્ઠ	રેત - મરલું
	રફ્તાર - વેંગ	અસર - પ્રભાવ	જુમલા - બંદું	વિરાસત - ડંદે તાયિગણિંદ બંદ
	મહસૂસ - અનુભૂવ	ઠેકા - ગુણુંગ	ઉપલબ્ધિ - સાધને	ધની - શૈંમુંડ
	બહાદુર - શોર એર	ખાનદાન - મુનેઠન	અખબાર - હૃતીકે	કરીબન - સુમારું
	ઇલાકા - બીંદી	વિતરક - હંચુંવરું	પૌફટના - નસુકું	ડુર્લભ - કેંગ સિગલાર્ડ,

1. એક વાક્ય મેં ઉત્તર લિખિએ:

1. અબ્દુલ કલામજી કા જન્મ કહું હુઆ ?

અભૂલ્ય કલાં રઘરુ એલી જનીસીદરુ?

ઉ : અબ્દુલ કલામજી કા જન્મ મદ્રાસ રાજ્ય કે રામેશ્વરમ કસ્બે મેં હુઆ ।

અભૂલ્ય કલાંરઘરુ ડીલુનાનિન રામેશ્વરું એંબ ચીકું હેઠુણાદલી જનીસીદરુ .

2. અબ્દુલ કલામજી કા જન્મ કબ હુઆ?

અભૂલ્ય કલાંરઘરુ એંદુ જનીસીદરુ?

ઉ : અબ્દુલ કલામજી કા જન્મ 15 અક્ટૂબર 1931 મેં હુઆ ।

અભૂલ્ય કલાંરઘરુ 15 અક્ટૂબર 1931 રલી જનીસીદરુ.

3. અબ્દુલ કલામજી બચપન મેં કિસ ઘર મેં રહ્યે થે?

બાળ્યદલી અભૂષણ કલાંરવરુ યાવ મુનેયલી વાસીસુકૃદદરુ?

ઉ : અબ્દુલ કલામજી બચપન મેં અપને પુશ્તૈની ઘર મેં રહતે થે।

બાળ્યદલી, અભૂષણ કલાંરવર તેમું પૂર્વજર મુનેયલી વાસીસુકૃદદરુ.

4. અબ્દુલ કલામજી કે બચપન મેં દુર્લભ વસ્તુ ક્યા થી ?

અભૂષણ કલાંરવર બાળ્યદલી, યાવું આપરાહદલી, દોખાંયું વસ્તુવાગીદદતુ?

ઉ : અબ્દુલ કલામજી કે બચપન મેં પુસ્તકે દુર્લભ વસ્તુ થી ।

અભૂષણ કલાંરવર બાળ્યદલી પુસ્તકગળું આપરાહદલી દોખાંયું વસ્તુવાગીદદતુ.

5. જૈનુલાબદીન ને કૌનસા કામ શરૂ કિયા ?

જૈનુલાબદીન રવરુ યાવ કેલસવનું પ્રારંભિસેદરુ ?

ઉ : જૈનુલાબદીન ને લકડી કી નૌકાએં બનાને કા કામ શરૂ કિયા ।

જૈનુલાબદીન રવરુ મઠર દોખાંગળનું તંયારિસુવ કેલસવનું પ્રારંભિસેદરુ.

6. અબ્દુલ કલામજી કે ચચેરે ભાઈ કૌન થે?

અભૂષણ કલાંરવર જિક્કુપ્પન મુગન હેસરેનુ?

ઉ : અબ્દુલ કલામજી કે ચચેરે ભાઈ શમસુદીન થે।

અભૂષણ કલાંરવર જિક્કુપ્પન મુગન હેસરુ શમુંદીન.

7. રામેશ્વરમ કિસ કારણ પ્રસિદ્ધ હૈ ?

રામેશ્વરી પ્રસિદ્ધ વાગું કારણવેનુ?

ઉ : રામેશ્વરમ પ્રતિષ્ઠિત શિવ મંદિર કે કારણ પ્રસિદ્ધ હૈ।

રામેશ્વરી પ્રતિષ્ઠિત શિવ દેવાલયકું પ્રસિદ્ધવાગીદે.

8. કલામ ઔર જલાલુદીન કિસ વિષય પર બાતોં કરતે થે ?

અભૂષણ કલાં મઠું જલાલુદીન રવરુ યાવ વિષયદ બગે માઠનાડુકૃદદરુ?

ઉ : કલામ ઔર જલાલુદીન આધ્યાત્મિક વિષય પર બાતોં કરતે થે।

અભૂષણ કલાં મઠું જલાલુદીન રવરુ આધ્યાત્મિક વિષયદ બગે ચેચીસુકૃદદરુ.

9. અબ્દુલ કલામ જી કે પિતા કૈસે વ્યક્તિ થે ?

અભૂષણ કલાંરવર તંદે યાવ સ્વભાવદ વાંદીયાગીદરુ?

ઉ : અબ્દુલ કલામ જી કે પિતા આડંબરહીન વ્યક્તિ થે।

અભૂષણ કલાંરવર તંદે આડંબરવિલાદ (સરલ) વાંદીયાગીદરુ.

10. જૈનુલાબદીન કી આદર્શ જીવનસંગિની કા નામ ક્યા થા ?

જૈનુલાબદીન રવર આદર્શ જીવન સંગાતીય હેસરેનુ?

ઉ : જૈનુલાબદીન કી આદર્શ જીવનસંગિની કા નામ આશિયમ્મા થા।

જૈનુલાબદીન રવર આદર્શ જીવન સંગાતીય હેસરુ આશીયમા.

11. કલામ જી કે અંતરંગ મિત્ર કા નામ ક્યા થા ?

કલાંરવર આત્મીય ગેલેયન હેસરેનુ ?

ઉ : કલામ જી કે અંતરંગ મિત્ર કા નામ અહ્મદ જલાલુદીન થા।

કલાંરવર આત્મીય ગેલેયન હેસરુ આહુદી જલાલુદીન.

॥ दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1. अब्दुल कलाम का बचपन बहुत ही निश्चिन्ता और सादगी में बीतने के कारण लिखिए ?

अभूला कलाम का बचपन बहुत ही निश्चिन्ता और सादगी में बीतने के कारण लिखिए ?

- | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> उ : अब्दुल कलाम के पिता आडंबर हीन व्यक्तिथे। वे अनावश्यक या ऐशो आरामी चीजों से वे दूर रहते थे। घर में आवश्यक चीजें समुचित मात्रा थे। वे सब चीजें सुलभता से उपलब्ध थे। | <ul style="list-style-type: none"> अभूला कलाम के पिता आडंबर हीन व्यक्तिथे। अपरा अनगत्ये मुत्तु अनावश्यक वस्तु गजिंद द्वारा जरुति द्वारा। मनेयली अगत्यवाद वस्तु गजु साकम्पु प्रमाणित दिलादवु। उ एलाल वस्तु गजु सुलभवागि लभुवागि द्वारा.. |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

प्रश्न 2. आशियम्माजी अब्दुल कलाम को खाने में क्या क्या देती थी ?

आशियम्माजी अभूला कलाम के पिता आडंबर हीन व्यक्तिथे ?

- | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> उ : कलाम जी रसोई घर में नीचे बैठ कर खाना खाते थे आशियम्मा खानेमें चावल एवं स्वादिष्ट सांबार डालती। साथ में घर का बना अचार देती। नारियल की ताजी चटनी भी देती थी। | <ul style="list-style-type: none"> कलाम के पिता आडंबर हीन व्यक्तिथे। आशियम्मा खानेमें चावल एवं स्वादिष्ट सांबार डालती। जूरे जौती गोदान देती। तेंगिन चिप्पीया सह नींदुत्ति द्वारा। |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

प्रश्न 3. जैनुलाबदीन नमाज के बारे में क्या कहते थे?

जैनुलाबदीन रवरु नमाज़ बगै़ी नींदिद हैँलैके एनु ?

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> उ : जैनुलाबदीन नमाज के बारे में यह कहते हैं - जब तुम नमाज़ पड़ते हो तो अपने आप में लीन हो जाते हो। तुम अपने शरीर से इतर ब्रह्मांड का एक हिस्सा बन जाते हो। जिस मे दौलत, आयु, का पता नहीं चलता। जाति या धर्म-पंथ का कोई भेदभाव नहीं रहता। | <ul style="list-style-type: none"> जैनुलाबदीन रवरु नमाज़ बगै़ी के रीति हैँलैत्तारै - यावाग नीवु नमाज़ मादुत्तीर्हो, निमुली नीवु लैनरागुत्तीरा। नीवु भौतिकवागि बुकाउंडद चंदु भागवागुत्तीरा आग नन्हु संष्ठु मुत्तु वयस्सुन बगै़ी ज्ञान जरुपदिला ज्ञाति धर्म पंथगज यावदें बैँधफावव्हा जरुपदिला |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

प्रश्न 4. जैनुलाबदीन का परिचय दीजिए ?

जैनुलाबदीन रवरु परिचयवन्नु नीँदे ?

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> उ : जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम के पिता थे। वे बुद्धिमान और उदारता की मूरत थे। वे एक आडंबरहीन व्यक्ति थे सभी अनावश्यक एवं ऐशो-आरामी चीजों से दूर रहते थे। धार्मिक एकता को मानने वाले व्यक्ति थे। अतिथियों की सेवा में ही संतृप्ति पाते थे। | <ul style="list-style-type: none"> जैनुला अबदीन अभूला कलाम तंदे यागिद्वारा। अपरा बुद्धिवंतरु मुत्तु उदारतेय मूर्तियागिद्वारा। अपरा आडंबरविलाद सरल वृक्षयागिद्वारा। अपरा अनगत्ये मुत्तु अनावश्यक वस्तु गजिंद द्वारा जरुत्तिद्वारा। धार्मिक एकतेयन्नु नंबिद वृक्षयागिद्वारा। अतिथिगज सैवेयलायी त्रृप्ति प्रदेयुत्तिद्वारा। |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

III. चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिएः

प्रश्न 1. शमसुदीन अखबारों के वितरण का कार्य कैसे करते थे ?

ठ०सुदीनों रवरु पत्रिकेज वितरक कैलसवन्नु होगे निभायिसुत्तिददरु ?

- उ : शमसुदीन अब्दुल कलाम जी के चरे भाई थे।
- वे रामेश्वरम् में अखबारों के एकमात्र वितरक थे।
- अखबार रामेश्वरम् स्टेशन पर सुबह की ट्रेन से पहुँचते थे।
- इस अखबार एजेंसी को अकेले शमसुदीन ही चलाते थे।
- रामेश्वरम् में अखबारों की जुमला एक हजार प्रतियाँ बिकती थी।

- उम्मीदीनों आयेरा कलांरवर चिक्कप्पन मग्नाग्निददरु.
- उवरु रामेश्वरंनलीन एकमात्र पत्रिका वितरक राग्निददरु.
- पत्रिकेजु रामेश्वरं नगरकै मुंजानेय चुंनली बरुत्तिददवु.
- क्ष पत्रिकैय एजेंसीयन्नु स्पैट्टः ठ०सुदीनों रवरे नदेसुत्तिददरु.
- रामेश्वरंनली प्रतिदिन सरिसुमारु 100 पत्रिकेजन्नु वितरिसुत्तिददरु

IV. इन मुहावरों पर ध्यान दीजिए :-

पौ फटना = प्रभात होना - नमूकेन ज्ञाव

काम आना = काम में आना, इस्तेमाल होना - कैलसकै बरुवुद्दु

V. अन्य वचन रूप लिखिएः

बद्धा - बद्धे
गली - गलियाँ

नौका - नौकाएँ
प्रतियाँ - प्रति

पुस्तके - पुस्तक
केला - केले

VI. विलोम शब्द लिखिएः

बहुत x कम
शाम x सुबह

सफल x असफल
अच्छा x बुरा

बड़ा x छोटा
अपना x पराया

VII. जोड़कर लिखिएः

अ.	आ	
1. मेरे पिता	चरे भाई	उ - जैनुलाबदीन
2. मद्रास राज्य	अंतरंग मित्रउ.	तमिलनाडु
3. शमसुदीन	रामानंद शास्त्री	चरे भाई
4. अहमद जलालुदीन	जैनुलाबदीन	अंतरंग मित्र
5. पक्षा दोस्त	तमिलनाडु	रामानंद शास्त्री
		रामेश्वरम्

VIII. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

- आशियम्मा उनकी आदर्श जीवनसंगिनी थीं।
- रामेश्वरम् प्रसिद्ध तीर्थस्थल है।

3. पुजारी पक्षी लक्ष्मण शान्ति मेरे पिताजी के अभिन्न मित्र थे ।

4. अखबार एजेंसी को अकेले शमसुद्दीन ही चलाते थे।

5. अहमद जलालुद्दीन की जोहरा के साथ शादी हो गई।

IX. अनुरूपता:

1. गाँधीजी : राष्ट्रपिता :: अब्दुल कलाम : उत्तर : **राष्ट्रपति**

2. जलालुद्दीन : जीजा :: शमसुद्दीन : उत्तर: **चचेरे भाई**

3. ट्रेन : भू-यात्रा :: नौका : उत्तर: **जल-यात्रा**

4. हिन्दू : मन्दिर :: इस्लाम : उत्तर: **मस्जिद**

X. सही शब्द से खाली स्थान भरिए :

1. अब्दुल कलाम का जन्म ----- में हुआ।

अ) चेन्नई आ) बैंगलूरु इ) **रामेश्वरम्** ई) श्रीरंगम्

2. रामेश्वरम् में प्रतिष्ठित----- मंदिर है।

अ) विष्णु आ) अय्यप्पा इ) हनुमान ई) शिव

3. जैनुलाबदीन की दिन चर्या के-----पहले शुरू होती थी।

अ) पौ फट्टे आ) सूर्यास्त इ) दोपहर ई) शाम

4. अहमद जलालुद्दीन अब्दुल कलाम को----- कहकर पुकारा करते थे।

अ) अब्दुल आ) **आज़ाद** इ) राष्ट्रवादी ई) कलाम

XI. वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

जीवन संगिनी - **सीता राम की जीवन संगिनी थी ।**

पुश्तैनी - **हम हमारे पुश्तैनी मकान में रहते थे ।**

प्रसिद्ध - **काशी एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है ।**

दिनचर्या - **मेरी दिनचर्या सुबह 5 बजे से होती है ।**

संतुष्टि - **मैं संतुष्टि से जीवन बिता रहा हूँ ।**

XII. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

घर - **गृह, मकान**

बुनियाद - **नींव**

शाम - **सायंकाल**

शरीर - **काया, तनु**

दोस्त - **मित्र, सखा**

ಕನ್ನಡ ಸಾರಾಂಶ : ನನ್ನ ಬಾಲ್ಯ

“ನನ್ನ ಬಾಲ್ಯ” ಇದು ಎ.ಪಿ.ಜೆ. ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂ ರವರ ಆತ್ಮಕಥೆಯಾಗಿದೆ. ಈ ಪಾಠದ ಮೂಲಕ ನಮ್ಮ ಮಾಜಿ ರಾಷ್ಟ್ರಪತಿಯಾದ ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂನವರು ತಮ್ಮ ಬಾಲ್ಯಜೀವನದ ವಾಸ್ತವಿಕ ಅಂಶಗಳನ್ನು ನಮ್ಮ ಮುಂದೆ ಇಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ.

ಇವರು ಮದ್ದಾಸ್ ರಾಜ್ಯದ (ಕೆಗಿನ ತಮಿಳುನಾಡು) ರಾಮೇಶ್ವರಂ ಎಂಬ ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ಪಟ್ಟಣದಲ್ಲಿ 15ನೇ ಅಕ್ಟೋಬರ್ 1931ರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದರು. ಇವರ ತಂದೆ ಹೆಸರು ಜ್ಯೇನುಲಾಬದೀನ್ ಹಾಗೂ ತಾಯಿಯ ಹೆಸರು ಆಶಿಯಮ್ಮೆ ಆಗಿತ್ತು. ಇವರ ತಂದೆ ತಾಯಿಯವರಿಗೆ ಜಿಪಚಾರಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ ದೊರಕಿರಲಿಲ್ಲ. ಆದರೂ ಸಹ ಅವರನ್ನು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಆರ್ಥರ್ಡಂಪತಿಗಳಂತೆ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರು ಅವಿಭಕ್ತ ಕುಟುಂಬದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಿದ್ದಾರು. ಇವರ ಮುತ್ತುಜ್ಞನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ, ವಾಸವಾಗಿದ್ದಾರು

ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರ ತಂದೆ ಆಡಂಬರವಿಲ್ಲದ (ಸರಳ) ವ್ಯಕ್ತಿಯಾಗಿದ್ದಾರು ಅವರು ಅನಗತ್ಯ ಮತ್ತು ಅನಾವಶ್ಯಕ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ದೂರ ಇರುತ್ತಿದ್ದರು. ಮನೆಯಲ್ಲಿ, ಆಗತ್ಯವಾದ ವಸ್ತುಗಳು ಸಾಕಷ್ಟು ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿದ್ದವು. ಆ ಎಲಾಲ್ ವಸ್ತುಗಳು ಸುಲಭವಾಗಿ ಲಭ್ಯವಾಗಿದ್ದವು. ಹೀಗೆ ಅವರ ಬಾಲ್ಯ ಸರಳ ಹಾಗೂ ನಿಶ್ಚಂತತೆಯಾಗಿ ಕಳೆಯಿತು ಎಂದು ಹೇಳಬಹುದು.

ಕೆಲಾಂರವರು ತನ್ನ ತಾಯಿಯ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಡುಗೆ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಳಗೆ ಕುಳಿತು ಉಟ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರು ಆಶಿಯಮ್ಮೆ ಉಟದಲ್ಲಿ ಅನ್ನ ಮತ್ತು ರುಚಿಯಾದ ಸಂಭಾರವನ್ನು ಬಡಿಸುತ್ತಿದ್ದರು ಇದರ ಜೊತೆಗೆ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ತಯಾರಿಸಿದ ಉಪಿಸ್ತನಾಯಿ ಸಹ ಇರುತ್ತಿತ್ತು. ತೆಂಗಿನ ಚೆಟ್ಟಿಯೂ ಸಹ ನೀಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಹೆಸರಾಂತ ಶಿವಮಂದಿರ ರಾಮೇಶ್ವರಸಿಂದ ಇವರ ಮನೆ ತುಂಬಾ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿತ್ತು. ಅವರ ಮನೆಯ ಸುತ್ತ ಮುತ್ತಲು ಮುಸಿಲಂ ಕುಟುಂಬಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿದ್ದವು ಹಾಗೂ ನೇರೆ - ಹೊರೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲವೇ ಹಿಂದೂ ಕುಟುಂಬಗಳ ಮನೆಗಳು ಇದ್ದರೂ ಕೂಡ ಎರಡೂ ಧರ್ಮದ ಜನರು ಪರಸ್ಪರ ಕೂಡಿ ಬಾಳುತ್ತಿದ್ದರು. ರಾಮೇಶ್ವರಂ ದೇವಸ್ಥಾನ ಹಿರಿಯ ಪುರೋಹಿತರಾದ “ಪ್ರಕ್ಷಿಲಕ್ಷ್ಮಣ ಶಾಸ್ತ್ರ” ಯವರು ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂ ರವರ ತಂದೆಗೆ ಆತ್ಮೀಯ ಸ್ವೇಷಿತರಾಗಿದ್ದರು. ಇಬ್ಬರೂ ಪಾರಂಪರಿಕ ವೇಶ-ಭೂಷಣದ ಉದ್ದುಪುಗಳನ್ನು ಧರಿಸುತ್ತಿದ್ದರು ಹಾಗೂ ಆಧಾರ್ತಿಕ ವಿವರಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಚೆಚ್ಚಿ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರು.

ನಮಾಜ್ ಮಹತ್ವದ ಬಗ್ಗೆ ಕುರಿತು ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರ ತಂದೆ ಹೀಗೆ ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದರು.. ಯಾವಾಗ ನೀವು ನಮಾಜ್ ಮಾಡುತ್ತಿರೋ, ನಿಮ್ಮಲ್ಲಿ ನೀವು ಲೀನರಾಗುತ್ತೀರಾ. ನೀವು ಭೌತಿಕವಾಗಿ ಬುಹಾಂಡದ ಒಂದು ಭಾಗವಾಗುತ್ತೀರಾ. ಆಗ ನಿಮ್ಮಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಮಂತಿಕೆ, ವಯಸ್ಸು ಜಾತಿ, ಧರ್ಮ ಪಂಥಗಳ ಯಾವುದೇ ಭೇದಭಾವ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರು ತಮ್ಮ ಇಡೀ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ತಾಂತ್ರಿಕತೆ ಹಾಗೂ ಪ್ರಫ್ಲಾನಿಕೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆಂದು ಒಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದರು. ಆದರೂ ತಮ್ಮ ತಂದೆಯವರ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರು ತನ್ನ ತಂದೆಯ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನದಿಂದ ಅವರು ಒಂದು ನಿಧಾರಕೆ ಒಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ ನಮ್ಮ ನಡುವೆ ಒಂದು ದೃವೀಶಕ್ತಿ. ಇದೆ ಅದು ನಮಗೆ ಎಲಾಲ್ ಭೂಮೆ ಹಾಗೂ ದುಃಖಿಗಳಿಂದ ದೂರ ಮಾಡುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಇದು ನಮಗೆ ಒಂದು ಸರಿಯಾದ ಮಾರ್ಗದ ಕಡೆಗೆ ನಡೆಸುತ್ತದೆ.

ಅಹಮದ್ ಜಲಾಲುದೀನ್‌ರವರು ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರ ಭಾವ ಆಗಿದ್ದರು. ಅವರು ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರಿಗೆ “ಆಜಾದ್” ಎಂದು ಕರೆಯುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರು ಬಹಳಷಟ್ಟು ಸಮಯವನ್ನು ಜಲಾಲುದೀನ್‌ರವರ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಕಳೆಯುತ್ತಿದ್ದರು ಇಂತಹ ಸಂಧರ್ಭದಲ್ಲಿ ಆಧಾರ್ತಿಕ ವಿಚಾರಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಚೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿದ್ದರು ಇಂತಹ ಜಲಾಲುದೀನ್‌ರವರು ಆಗ್ಲು ಭಾವೇಯಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಪರಿಣಿತಿಯನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದರು ಜೊತೆಗೆ ಅವರು ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿರುವಂತಹ ಬಹಳಷಟ್ಟು ವಿವರಗಳ ಬಗ್ಗೆ ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರಿಗೆ ಪ್ರಸ್ತುತಿಗಳನ್ನು ಓದುವುದು ಆಸಕ್ತಿಯಾಗಿತ್ತು. ಎಸ್.ಟಿ.ಆರ್ ಮಾನಿಕಂ ರವರ ಸ್ವಂತ ಗ್ರಂಥಾಲಯವಿತ್ತು. ಮಾನಿಕಂ ರವರು ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂ ರವರಿಗೆ ಪ್ರಸ್ತುತಿ ಓದಲು ಹೇಳುತ್ತಾನಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರು ತಮ್ಮ ಚಿಕ್ಕಪ್ಪನವರ ಮಗನಾದ ಶಂಸುದೀನ್‌ರವರ ಜೀವನವು ಇವರ ಮೇಲೆ ತುಂಬಾ ಆಳವಾದ ಪ್ರಭಾವನ್ನು ಬೀರಿದೆ ಎಂದು ಒಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಅವರು ಒಂದು ಪಶ್ಚಿಮ ಎಚೆನಿಸಿಯನ್ನು ಅವರೇ ಸ್ವಾತಃ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಬ್ದುಲ್ ಕೆಲಾಂರವರಿಗೆ ಮೂರು ಜನ ಆತ್ಮೀಯ ಸ್ವೇಷಿತರಿದ್ದರು. ಅವರ ಹೆಸರು ರಾಮಾನಂದ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಅರವಿಂದನ್ ಹಾಗೂ ಶಿವಪ್ರಕಾಶ್ ಇವರು ಬಾಹ್ಯಾನಿ ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವರಾಗಿದ್ದರು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಬೇರೆಬೇರೆ ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಸೇರಿದರೂ ಸಹ ಅವರಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ರೀತಿಯ ಭೇದಭಾವಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶವಿರಲಿಲ್ಲ.